न्द्र सिह चौहान का जन्म 15 मई
पुर जिला (म० प्र०) मे जिलाधिकारी
चौहान के घर हुआ । डॉ० सिह ने
ालेज से चिकित्सक की शिक्षा पूर्ण
व अमेरिका से शोध कार्य किया।
टेनिग इन्दौर और बगलौर से पूरी
देशक – टी० बी० ट्रेनिग सेन्टर
त होकर देश के महत्वपूर्ण मेडिकल
मा सम्बन्धी सस्थानो से सम्बद्ध हैं।
मे डॉ० सिह का उनके रोगी मसीहा

विद्यार्थी होने पर भी डॉ० चौहान
ुडे रहे, चाहे वह उनके द्वारा लिखे
सरो की रचनाओ पर सुरेन्द्र जी का
दशक पूर्व से वह कविताए कहानियॉ
है। कविताए लिखना उनके जीवन
कार्य बन चुका है । डॉ० चौहान
० रोग विशेषज्ञ एव व्यस्त चिकित्सक
स्थ 50 डाक्टर विशेषज्ञ एव
दस घण्टे अपने रोगियो की सेवा मे
इस व्यस्त जीवन मे भी वह लिखने
मय देकर साहित्य की सेवा कर रहे
रा बडा सहयोग है।

रै
न ।
?
व
ा
)
ते
ते
ट
र

अज्ञात चितवन

(काव्य संग्रह)

डॉ० सुरेन्द्र सिंह चौहान

(क्षय रोग विशेषज्ञ)

अध्यक्ष

श्री अरविन्द सोसाइटी केन्द्र

बुन्देल खण्ड, नौगाव, जि० छतरपुर, म०प्र०

स्नेहल प्रकाशन

इलाहाबाद-211001

अज्ञात चितवन

—— दृष्ट चादृष्टं च—— अनुभूत च,
सच्चा सच्च, सर्वम् पश्यति ,सर्वः पश्यति।।

जो देखा गया है और जो देखा नहीं गया है, जो अनुभूत हुआ है और जो अनुभूत नहीं हुआ है, जो है और जो नहीं है--उस सबको वह देखता है, वह सर्व है और सब देखता है।

प्रश्नोपनिषद - 4 - 5

प्राक्कथन

बुद्धि, हृदय और हाथ (हैड, हार्ट एंड हैंड) तीनों का जीवन में बड़ा महत्व है। कुछ लोगों में बुद्धि प्रधान होती है। अतः उनकी रुचि ज्ञान विज्ञान में होती है। कुछ का हदय प्रधान होता है, ऐसे लोग सब के प्रति प्रेम का भाव रखते है साथ ही दूसरों के दुःख मे दुःखी हो जाते हैं और प्रभु की कृपा में श्रद्धा विश्वास रखते है। तीसरी श्रेणी उन लोगों की है जो कहते हैं "अपना हाथ जगन्नाथ"। ऐसे लोग बड़े कर्मठ होते है और यदि उनमे आध्यात्मिकता विकसित हो जाये तो कर्मयोगी बन जाते है।

"अज्ञात चितवन" के कुशल कवि डॉ० सुरेन्द्र चौहान पेशे से क्षयरोग विशेषज्ञ है। चिकित्सा विज्ञान पर उनकी अच्छी पकड़ है। अतः इस दृष्टि से डॉ० चौहान बुद्धि प्रधान व्यक्ति हैं। लेकिन उनकी श्रद्धा, भक्ति और आत्म-समर्पण श्री अरविंद और श्री मां के प्रति अनुकरणीय है। रोगी की चिकित्सा करते समय, उनकी चेतना में श्री मां की शक्ति प्रधान होती है। वे मां का स्मरण कर सभी कार्य करते हैं। अतः उनकी प्रसिद्धि एक उच्च श्रेणी के चिकित्सक के रूप में है। डॉ० चौहान कर्मयोगी भी हैं। श्री अरविंद और श्री मां के प्रति उनका प्रेम उन्हें ऐसे कार्य की ओर प्रेरित करता है जो मूलतः आध्यात्मिक है। किस प्रकार सभी लोग सुखी हों, कैसे श्री अरविंद और श्री मां की

है इस प्रकार हम देखते है कि कविवर सुरेन्द्र जी के जीवन मे बुद्धि हृदय और हाथ तीनों का सुन्दर समन्वय है।

प्रस्तुत कविता संग्रह मे डॉ० चौहान की लगभग सौ कविताये हैं। इनकी रचना सन 1976,1977 और जुलाई 1978 की अवधि मे हुई है। इस अवधि मे देश की जो दशा रही है, समाज और संस्कृति पर जो संकट आये है, उनकी छाप इन कविताओं में मिलेगी। कवि ने बाह्य जीवन से अधिक आन्तरिक जीवन पर बल दिया है। अत चिन्तन का 'अज्ञात' होना इस बात का संकेत है कि अज्ञान के कारण "अज्ञात" उत्पन्न होता है। जब सत्य का ज्ञान होता है और कवि उच्चतर चेतना के क्षेत्र में प्रवेश करता है, तब उसे सत्यं, शिव और सुंदरम् के दर्शन होते हैं। कविवर सुरेन्द्र चौहान की समस्त रचनाए शुद्ध, सात्विक और दिव्य प्रेम की अभिव्यक्ति है। अंतर केवल चेतना के कारण है। श्री अरविंद और श्री मा के आशीर्वाद से डा0 चौहान की काव्य प्रतिभा ससीम से असीम की ओर अग्रसर है। अत भविष्य मे कवि की वे कविताये हमे पढ़ने को मिलेंगी जो इक्कीसवीं शताब्दीं मे आध्यात्मिक चेतना का प्रसार करेंगी और सामान्य जीवन को दिव्य जीवन मे रूपांतरित करने में सहायक होंगी।

पांडिचेरी

डॉ0 सीता राम जायसवाल
एम०ए०, एम०एड०(हार्वर्ड)
पी0एच0डी0 मिशीगन
शिक्षा संकाय (लखनऊ विश्वविद्यालय उ0प्र0)
लखनऊ उत्तर प्रदेश

मेरी दृष्टि में

लक्ष्यहीन जीवन निरर्थक है ।

"श्री अरविन्द"

मानव के मन में कभी न कभी,एक क्षण को ही सही विचार अवश्य आता है कि उसका जन्म क्यों हुआ, आखिकार इस जीवन का उद्देश्य, लक्ष्य क्या है? जीवन में नाना प्रकार के सुख भोगना, फिर दुख भोगना, कभी धूप कभी छांव में जीवन का विकास होते जाना, उम्र का बढ़ते जाना और फिर एक दिन सब समाप्त हो जाना क्या इसी को जीवन कहा जाता है? अगर जीवन यह नही है तो फिर जीवन क्या है और कौन इसे इस प्रकार से नियंत्रित करते हुए आगे चलता रहता है? इस प्रकार के विचार आते ही एक दम मानव मन चौंक जाता है और इस विषय में अपने मन को हटाकर अन्यत्र कहीं लगाने का प्रयत्न करता है। क्योंकि गंभीरता से वह इस पर विचार करना नही चाहता परन्तु कहीं और लगाने का प्रयत्न करता है। मन कही भी लगाया जाये पर फिर कभी अकेले में, कभी सुख में, कभी दुख में, कभी घृणा में, कभी जीत में, कभी हार में फिर यही विचार आयेगा कि "तत. किम् तत किम्"। मन की यह अवस्था विकास की परिचायक है और मन की जो आगे की यात्रा है उसमें यह प्रश्न, यह विचार आवश्यक है। इसीलिए सूक्ति कहती है "उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरात वोधय, उपदेशन्ति ते ज्ञानिनम् ज्ञानिना तत्व दर्शिन " 'उठो जागो और श्रेष्ठ पुरुषो के चरणो मे बैठो, वे तुम्हे तत्व के सार की बातें बताकर ज्ञान देगे''।

आशय यह है कि पहले उठो फिर जागो फिर तत्व दर्शन प्राप्त करो तब यह समझ में आयेगा कि मनुष्य, मनुष्य जन्म का लक्ष्य, उद्देश्य क्या है और यह लक्ष्य कैसे प्राप्त किया जाये।

मतो की भिन्नता होने के कारण मार्ग अलग-अलग है। पृथक-पृथक ऋषियो ने, आचार्यों ने, धर्म-गुरुओ ने अपने अपने मत के अनुसार मार्गदर्शन दिया। यह मार्ग देश और काल के अनुसार भी भिन्न है। कई पथ सुगम है और कई पथ दुर्गम है। फिर भी अनादि काल से यह यात्रा चल रही है और आज के इस अनिविर्कासित युग में भी मानव इस महायात्रा मे एक पथिक की भांति अपनी यात्रा पूरी कर रहा है। अन्तर एक और है। इस भीड़ भरी यात्रा में अनचाहे लोग भी एक दूसरे का धक्का खाकर आगे की ओर बढ रहे हैं वही दूसरी ओर सजग मानव अपने गन्तव्य को जानते हुए, यात्रा के पथ को जानते हुए सावधानी पूर्वक आगे की ओर बढ़ रहा है। महायात्रा मे विरोध अथवा कष्ट आने पर सभी पथिक गगन की ओर आशा भरी निगाहो से देखते हैं कि शायद ऊपर से कोई सहायता प्राप्त होगी, कोई "अज्ञात चितवन" उसे देखकर इस कठिनाई से बाहर निकालेगी और वे सहायता की आशा करते है। इस महायात्रा का संचालन स्वयं प्रकृति कर रही है, स्वयं जगत जननी अदिति माता, श्री मा कर रही है। प्रत्येक मानव की यात्रा पूर्ण कराने का आश्वासन भी उन्हीं से प्राप्त हुआ है।

श्री अरविंद दर्शन में समूची प्रकृति का रूपांतरण करना उद्देश्य है। ऋषिवर का कथन है कि "मानव मन विकास की अंतिम सीढी नही है इसके ऊपर भी मानव को यात्रा करना है और मन को विकसित

उसको अतिमन तक ले जाता है। इसका विकास अतिमानस के लोक से होगा। पहले मानव को आरोहण अतिमानसिक लोक में करना होगा और फिर उसी चेतना अर्थात अतिमानस की चेतना को धरा पर उतार कर मानवी प्रकृति का रूपान्तरण करना होगा, इसे दिव्य बनाना होगा। श्री अरविंद यह भी कहते कि कोई कितना भी शक्तिशाली द्रुतगामी और विवेकशील मन हो वह अपने बलबूते पर इस कार्य को नहीं कर सकता। इसके लिए जगत जननी श्री मा की सहायता अतिआवश्यक है तभी यह यात्रा पूर्ण होगी।

जिन्होंने इस विचार धारा को अपनाया है और अपने पूरे जीवन को श्री मा को समर्पित किया है तथा श्री अरविंद के पूर्ण योग-रूपांतरण को योग अपने जीवन मे उतारा है वे डा० सुरेन्द्र चौहान है। डा० चौहान क्षय रोग विशेषज्ञ हैं। तीन प्रांतो से क्षय रोगी यहा आकर अपना इलाज करवाकर स्वास्थ्य लाभ करते हैं। परंतु डा० चौहान कहते हैं " आई ट्रीट श्री क्योर्स" कौशल तो रोज देखने को मिलता है कि डा० चौहान रोगियो से मजाक करके हसाते भी रहते है और उनका दुख दर्द कम होता जाता है। वे कहते है "मेरी चिकित्सा का ही यह एक अंग है और उस रोगी के अन्दर विद्यमान नारायण की यह एक सेवा भी है। क्या यह एक आश्चर्यजनक नहीं लगता कि पूरे समय प्रात से सायं तक क्षय रोगियों के बीच रहकर व्यस्ततम समय में भी काव्य रचनाये करना। काव्य रचनाओं से ऐसा भी प्रतीत हो सकता है कभी कभार एकाध कविता लिख दी। लेकिन ऐसा है नहीं- कविता दर कविता, कविताए, कविताओं का ढेर और फिर उनको चुन-चुन कर अलग-अलग विषय

बार प्रकाशन हेतु भेजकर प्रकाशित कराना यह सब काम डा० चौहान बड़े चाव से करते है। श्री मोती लाल वोरा जी (भूतपूर्व राज्यपाल उत्तर प्रदेश) ने एक कविता संग्रह के विमोचन पर आश्चर्य व्यक्त किया कि, विज्ञान का पंडित काव्य का पंडित कैसे बन सकता। इस विषय मे मैने भी डॉ० चौहान से चुटकी लेते हुए पूछा कि यह क्या करिश्मा है उन्होने मुस्कुरा कर कहा "वो लिखवा देती है मै तो मात्र डिक्टेशन लेता हू"। वो से उनका आशय श्री मा से है जिनको यह पूरी रचना ही समर्पित हैं।

उनकी काव्य रचनाओ मे अध्यात्म ओतप्रोत है। उसी की एक बानगी मैने "अज्ञात चितवन" के रूप मे देखी। अध्यात्म मे रुचि रखने वाले इसका मूल्याकन अपने हृदय मे कर सकेगे।

श्री अरविंद और श्री मा का एक जीवन्त केन्द्र जिसमे श्री अरविंद के पवित्र देहांश भी स्थापित है डा० चौहान द्वारा नौ गांव मे संचालित है, डा० चौहान को साधुवाद और उनकी दीर्घ आयु की कामना ताकि सृजन कार्य भी लम्बे समय तक चलता रहे।

डा० आर० पी० श्रीवास्तव

सचिव

श्री अरविंद सोसायटी केन्द्र

नौगाँव छतरपुर म०प्र०

एक दृष्टि

जो व्यक्ति चेतना से सम्पृक्त होता है वह इस प्रयास में रहता है कि ब्रह्माण्ड का हर कण प्रभावित हो जाय। विश्व कल्याण की भावना ऐसे चेतन व्यक्ति की आंतरिक ऊर्जा होती है और वह ऐसे असम्भव से लगने वाले कार्यों को अंजाम देता है जो समाज को परिवर्तन के नये कोण पर पहुचा देते हैं। ऐसे व्यक्ति आसपास के वातावरण से उद्वेलित होते हैं, विचार उनके मन में पकते हैं और विभिन्न माध्यमों से जनसामान्य के समक्ष उद्घाटित होते हैं।

डाक्टर सुरेन्द्र सिंह चौहान पेशे से चिकित्सक हैं, बुंदेलखण्ड क्षेत्र में मसीहा के रूप में सम्मानित हैं और लगभग पचास कर्मचारियों, डाक्टरों वाले एक बड़े अस्पताल का संचालन करते हैं। इतने अधिक व्यस्त चिकित्सक से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह किसी अन्य कार्य के लिए एक घटे का भी समय निकाल पायेगा परंतु अज्ञात चिंतन को पढने से ऐसा लगता है कि रचनाकार पूरे वक्त केवल कविताओं में जीता है। डाक्टर चौहान की कई पुस्तकें मैंने पढी हैं और खुद से कई बार सवाल किया है कि एक व्यक्ति इतनी खूबसूरत कविताएं इतनी अधिक मात्रा में कैसे लिख सकता है। आध्यात्मिक और दार्शनिक विचारो से परिपूर्ण ये कविताएं न केवल मानस को उद्वेलित करती हैं बल्कि समाधान के रास्ते भी दिखाती हैं।

अक्सर अध्यात्म की बातें करने वाले लोग भौतिकवादी दुनिया को नजर अंदाज करते हैं। जगत मिथ्या कहकर शायद पलायन का रास्ता दिखाते हैं। परंतु डाक्टर चौहान की रचनाएं सामाजिक विषमताओं, भ्रष्टाचार और शोषण के खिलफ

जूझने की प्रेरणा देती हैं। इन कविताओ में ऐसे औजार की तलाश दिखती है जो मानव के अस्तित्व की रक्षा में काम आ सके। एक चिकित्सक की 'डायग्नोसिस' और एक आध्यात्मिक विचारक के तथ्यात्मक विश्लेषण से प्रस्तुत सग्रह लाभान्वित हुआ है।

आज जबकि मनुष्य जीवन बचाने के लिए हर सही, गलत काम करने को विवश हो रहा है, समझौता कर रहा है, इस तरह की पुस्तकों की महती आवश्यकता है। जरूरत इस बात की है कि इस तरह की पुस्तको के प्रसार पर ध्यान दिया जाये। सचमुच सामान्य जन को ताकत देने वाले विचारो को उन तक पहुचाना मानव कल्याण की दृष्टि से एक महान कार्य होगा। डाक्टर चौहान के अदर जो तड़प जो बेचैनी पतनोन्मुख समाज को लेकर है, उम्मीद है वही ऊर्जा तैयार करेगी और प्रकाश पुंज मे परिवर्तित होकर भमित जनमानस का मार्ग निर्देशन करेगी।

अत मे डाक्टर चौहान को उनके इस स्तुत्य कार्य के लिए साधुवाद ।

गोपाल रंजन
धर्मरत्न

सपादक - सरोकार संगम
पूर्व मुद्रक, प्रकाशक - नार्दर्न इंडिया पत्रिका,
पत्रकार कालोनी, इलाहाबाद

लेखक की अपनी बात

आदिकाल से, रविदेव अपनी अनगिनत किरणों से धरा को आत्मज्ञान, सत्यबोध और दिव्य-जीवन आनन्दमय, ज्योतिर्मय, प्रेममय की प्रेरणा देता आ रहा है परन्तु मानव-मन के विचार-रूपी घोड़े दिशाहीन, लक्ष्यविहीन सार्थक न होकर, भुवन-भास्कर की आभा को समेटकर परम सत्य के स्वर्णिम पर्दे को हटा न सके। विचारों की प्रतिस्पर्धा में सत्य के प्रतीक दिनकर का ऊषा काल ने स्वागत किया, शुद्ध पावन जल का अर्घ्य दिया परन्तु विचारों की अस्थिरता और अव्यवस्थता में अस्ताचल गामी सूर्य को न नमस्कार किया और न कल सुबह का आगमन ही लिया। इस भ्रमित स्थिति में दार्शनिक, चिंतक, मनीषियों महर्षियों ने समन्वय, सामंजस्य और एक रसता की आदिकाल से खोज की और विभिन्न धर्मपंथों मतों/मीमांसाओं से प्रतिष्ठापित करने का अथक प्रयास करते रहे। मानव के क्रम-विकास में परम की स्वीकृति और जगत जननी करुणा ने इस भ्रम जाल के कोहरे को पूर्ण योग की साधना, विधि-विधान और स्पष्ट रूप से धरा पर रखा जिसे ज्ञान योग भक्ति योग और कर्मयोग के नये स्वरूप को सुलभ सरस बनाकर साधारण मानव में और विश्व चेतना में अतिमानसिक चेतना प्रस्थापित की, अंगीकृत क्रिया और समय की पुरानी टेर को सकारात्मकता और सार्थकता को जीवन बनाया।

नवयुग के आगमन पर पांचजन्य का उद्घोष, मंदिरों की घंटियों की जगह दिव्यगान स्वरित हो चुका है। पक्षियों के कलरव में एक नवीन मिठास, प्रकृति की अंगड़ाई में सुप्रभात का झाकना और दृष्टा की निगाहें अपनी रचना को सवित्री के यशोगान से प्रतिभामंडित करना, आत्मा में चैत्यबोध, चैत्यशक्ति के माध्यम से पुरुष का प्रादुर्भाव सुलभ

कर दिया यदि तो इसके लिए वर्तमान समाज को सामर्थ्य न दी है [illegible] स्वीकृति दे दी है। मानवता का सही अर्थ और स्वरूप - प्रत्यक्ष [illegible] काल से विलीकृत होकर अपनी मिट्टी पर [illegible] है। अतिशयोक्ति न होगी, कि हजारों वर्षों में तपस्वी, योगी, दार्शनिक और सरल मानव प्रभु-द्वार की ओर निगाहें लगाये थे। उन्हें [illegible] कहने में हिचक नहीं थी, आज वही सृष्टा स्वयं प्रत्यक्ष होकर अन्तर चक्षु खोलेगा, आपको पास अपना आभास प्रभाव और चमत्कारिक प्रमाण देने को। केवल ईश्वरोन्मुखी इस भावना को पा सकने का अधिकारी होंगे और स्वयं के लिए सोचने वाले, जीने वाले और कर्ताभाव में लीन अहंकारी के लिए सर्वनाश यानि पातालगामी होने की प्रबल सम्भावना है। उस परम की चेतना का प्रभाव, कला में, साहित्य में, कविता में परिलक्षित होने लगा है। मानव सत्य को समझने, जीने और परम की अभिव्यक्ति की तीव्र अभीप्सा में अवगाहन कर योग यज्ञ में [illegible] विचारों, विधियों और कृत्यों में परिवर्तन कर दृष्टि बनाना [illegible] युग का आह्वान में संलग्न हो रहा है।

युग का रूपांतरण, मानव सत्ता में सक्रिय होने के लिए अग्रसर है।इसी आभास और अज्ञात-ज्ञान राशियों के पुण्य-प्रभाव से इस साधना में उस अज्ञात चितवन की महती कृपा शायद अपनी बात काव्य-रूप में जन्म ले रही हैं जिन्हें लिपिबद्ध करने की धृष्टता मैंने कर डाली। मैं जानता हूँ कि मैं योगी नहीं, कवि तो कभी नहीं। व्याकरण और काव्यधारा से अनभिज्ञ इस पराज्ञान को यंत्र मात्र समझ लूं तो मेरे उत्थान के लिए सभी साधकों को इस संग्रह को तर्क और ज्ञान की तराजू में न तौल कर मौन स्वीकृति और प्रेरणा रूप शुभाशीष की अपेक्षा करता हूँ।

इस भागवत मुहूर्त में श्री अरविंद और श्री माँ के पूर्ण योग से भारतीय संस्कृति की उपलब्धियों का अध्ययन व चिंतन किया अपितु

संसार के विभिन्न लोगों से उसने आत्मिक स्पंदनों और संवेदनों को अनुभूत किया है, तदनुसार मैं अलौकिक-देव की धरा पर आरोहण की घोषणा की और उस अतिमानसिक चेतना को सत्यापित किया, साधित किया, जिससे जिज्ञासु को भूख का और प्यासे को स्वाती की बूंद का आश्वासन दिया औ पर्याप्त मात्र दृष्टव्य है।

जिस तरह राम के लक्ष्मण व और आसमान में असाध्य होते हुए भी अपने लक्ष्य में परिचित थे, कृष्ण की गीता के लिए अर्जुन को पात्र बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इसी तरह इस युग में श्री माँ की दिव्य-दृष्टि ममता, करुणा, आशीष एवं विश्व-कल्याण हेतु उचित पात्र को समय द्वारा अनुशंसित, प्रेषित हस्ताक्षर, समर्पण त्याग और अभीप्सा की स्याही से हस्ताक्षरित हो वह माँ का कृपा पात्र हो जाता है। चाहे वह व्यक्ति इससे अनभिज्ञ और अपरिचित हो। यह दिव्य तपस्विनी प्रयोगशाला पांडुचेरी में शुरू की गयी थी और आज के युग में मार्मिक और उचित दिशा-बोध देती है, जिसमें निहित है, विश्व कल्याण, मानव का सवर्धन प्रोत्साहन जिसे माँ की आँखें अबाध अव्यक्त रूप में देखती हैं, संचालित करती और उनके लिये स्वयं योग करती हैं। श्री माँ ने साधकों से कहा था कि मैं आँखों में झाँक कर उस व्यक्ति की चेतना और चैत्य-पुरुष का प्रस्फुटन करती हूं। प्रत्येक व्यक्ति का परम कर्तव्य है वह इस स्वर्णिम अवसर में पूर्ण आस्था, श्रद्धा से माँ की ओर खुली पुस्तक सा उन्मुख हो।

"ॐ आनंदमयी चैतन्यमयी सत्यमयी परमे"

डा० सुरेन्द्र चौहान
नौगाँव बी० के०डी०
जिला छतरपुर म०प्र०

अनुक्रम

अज्ञात स्त्रोत

एक रश्मि दे जाती ज्योति
एक शब्द दे जाता ज्ञान
एक बूँद दे जाती अमृत्व
एक निगाह करती नियंत्रित
एक क्षण करता झकृत अंतः
एक विद्युत करेंट देता झटका
सक्रिय अग्रसर मानव जागृत
यही क्रम-विकास का अबाध निर्झर।
रश्मि बन जाती रवि चंद्र आकाश-गंगा
शब्दो का प्रकपंन, स्पंदन, गाता देशराग
बूँद बनती ओस, मोती, पुरूष, पराग
निगाह संकेत देती माँ की ममतामयी उपस्थिति
क्षण बनते जाते साधना के स्वर श्रुति
विद्युत देती ऊर्जा जग की मशीन आश्रित
मानव उत्प्रेरित पाने को श्रेणी अतिमान नवीन दृष्टि
यही है माँ की अज्ञात -चितवन की करुणमयी दृष्टि।

मानव का क्रम विकास

जन्म जन्मान्तरो का [illegible] का फल
अपूर्णतायें रचती हैं इतिहास
कर्मयोग रत क्रमश: विकास
संकल्प, अभीप्सा, श्रद्धा विश्वास
सभी सुलभ माँ के स्पर्श का आभास ।

प्रतिभा श्री माँ का सरल उपहार
उत्कर्ष , सन्तोष ,प्रेरणा सभी साकार
योग किया नही जाता, यह तो [illegible] का उपहार
मानव सत्ता का आन्तर विकास , खोले चैत्यद्वार,
प्रभावहीन रह जाते,आसुरिक शक्तियों के प्रहार।

न पथ न सड़कों पर संकेत न पड़ाव
अंधे, गूंगे बहरे, बन,मिलेंगे उतार चढ़ाव,
अदृश्य अंगुलियाँ, आत्मबोध, आत्मदान का भाव
मनीषी, दार्शनिक,सिद्ध, साधू को जैसे ये है [illegible]
सरल अबोध प्रेमासिक्त, नही करता मोल-तोल भाव।

अतिमानसिक चेतना की धारा में रोज महाकुंभ मने
यही वैतरणी, इस शुभ घड़ी की, स्पंदन सूत्र बने
मात्र उसी का दिशाबोध और परमार्थ
तर्क कुतर्क का नहीं समय,उस पर निर्भर निष्कर्ष
नयी चेतना,नवयुग, में नव जीवन जीने का वर्ष।

सदबुद्धि

बहिर्मुखी जीवन, बिखर जाता

अंतरमुखी, आत्मकेन्द्रित परहित मे जाता

हर कर्म परात्पर को समर्पित, सार्थक होना

अकर्मण्य, आत्मबोधहीन, पशुवत होता।

बहुधा मानव पागल सृष्टा की सृष्टि समझ

कुछ समझ आता, बहुत कुछ उसके परे होता

ठंड मे सिहरन, गर्मी मे तपन, वर्षा मे छत या छाता होता

बसंत में सत बनते,स्वप्न अधूरा रह जाना।

प्राणी की परछाई ही है परम की छाया

मानव भ्रमित खोजता कस्तूरी और माया

विपरीत दिन सिद्ध देवी-देवता की गहते शरण

''माया मिली न राम'' रोते जब दिखता मरण।

जीवन दाता के लिये जिया करो

पंडो के आसरे, प्रमाण न जाया करो

योग मे होगा परात्पर से संयोग, योगमय कर्म करो

रोग, दुख, दर्द, मृत्यु परीक्षायें हैं उनसे न डरा करो।

तमीज

जीने की
समाज में उठने-बैठने की
बात और कम शब्दो में विचार
खाने, पीने, सोने की
यही सुधरकर तहजीब बन जाती
आदमी की सही तस्वीर बन जाती
जिन्दगी में इज्जतदार की गद्दी मिल जाती
फिर खुद्दार, खिदमतगार, सलाहकार भी
हमराज, हमसफर, हमदर्द, फकीर भी
रास्ता खुद दिखाता, नक्शे कदम
तदबीर, तकदीर और पीर भी
नेकी सीखी नहीं जाती
साथ रहती हर वक्त, गफलत भुलाती,
क्या वजह हम सब नेक न बन सके।
ज़िन्दगी से मिलिये पूछिये सलीका
गौरतलब वक्त का अंजान तरीका
जन्नत दोजख का मदरसा यहीं है
मौलवी पंडित देते दाखला
पास फेल आपके जहन जमीर का खेल
कुछ सीखो बढ़ते चलो, बिना टिकिट जिन्दगी की रेल।

पा आकुलता

कहाँ जाऊँ

कैसे पहचानूं

समय को कैसे रोकूं

कब तक आस लगाऊं

सत कबीर, रहीम, श्री अरविंद

कहते हैं तू हर मानव के अंत मे है।

अब तो हिम्मत हार गया

मैं खोजूँ ही क्यों यदि परिणति निश्चेतन में है।

न विवेक न पराज्ञान दिया

तेरे मधुर स्पंदन पर न ध्यान दिया

जो मन में आया वही किया

क्या भलाकिया या बुरा किया

मांगी हर चीज तुझी से तुझे कुछ भी न दिया।

जीवन गाकर काट लिया

'अत क्षणों में रोकड़ घाटे में, न्यूनतम विकास किया

तेरा पथ भी न ढूँढा न किसी से तेरा पता लिया

झूठी तसल्ली काफी थी, तूने सबका साथ दिया

नशा टूटा अंत. पीड़, न जप तप योग किया।

हृदय विदारक चीख पुकार का क्षण कैसा है

न गज-ग्राह-युद्ध न द्रौपदी-चीर-हरण जैसा है

न शबरी की अटल आशा, यह पत्थर न अहिल्या जैसा है

सभव

जब कर्मेन्द्रिय विश्राम करे
    ज्ञानेन्द्रिय सक्रिय नयी विद्युत ऊर्जा प्रवाह में।
ग्रीष्म की तपन से व्याकुल,
    मन विपन्न, हिल स्टेशन सैर की चाह में।
नये सटीक विचार आन्तर सहयोग,
    भौतिक जीवन से उठकर अध्यात्म की राह में।
ईश्वर प्रदत्त अवसर, अज्ञात मार्ग दर्शन
    मानव स्वयं मुड़ जाता, रहना माँ की बांह में।
चेतना शक्ति का प्रसार, उच्चतर लोक से
    चैत्य चेतना से निश्चेतना तक मिलता मोती सागर की थाह में।
चैत्य पुरुष जागृत, सक्रिय, पूर्ण सचेतन
    थामता जीवन रथ की बागडोर, मारता छलांग नव युग की राह में।
सत्ता का रूपांतरण, नये सिद्धि विधान
    कर्म योग ज्ञान योग का समन्वय, कह लुप्त असुर जलता डाह में।
परम सत्य की विजय, मिथ्यात्व का दमन
    अवांछनीय तत्त्व क्रमशः छटते, चेतना की दाह में।

उत्कट अभीप्सा

जब भाल स्वयं ही चमक उठे
ओंठो पर गुलाब खिल उठे
चंदन प्रेमाश्रु बन बह उठे
ज्ञान चक्र में ज्योति जल उठे
जीभ पर चमन के अंगूरी मिठास
अगरबत्ती की खुशबूमय हो हर श्वास
रक्त कण में शोलों का आभास
विचार विशुद्ध, ज्ञान दीप का उच्छ्वास।
व्यक्तित्व मोहक कंचन सा
माटी का पुतला आकर्षक देवों सा
बल साहस सक्षमता असुरों सा
बुद्धि विवेक कौशल देव लोक के सुरों सा।
सृष्टि गाये नैसर्गिक स्वरित गान
प्रकृति का आर्केस्ट्रा का चैतन्य सुरापान
हर मानव हो सृष्टा के अनुरूप
पुण्य धरा पर बरसे अतिमानसिक धूप
मनमंदिर के पट स्वयं ही खुल जायेंगे
हर कीटाणु एक स्वर में ऊँ नमो भगवते मंत्र गायेंगे
चैत्य पुरूष होकर प्रमुख, बीथोविन बन जायेंगे
मां का अमर साम्राज्य हम आदर्श शिशु बन जायेंगे।
तब कोई शिक्षक गुरू पंथों का नायक
लुप्त स्वयं हो जायेंगे भोंड़े गीतों के गायक
न ऊँच नीच, सत्य प्रेम आनंद का परिव्राजक
परम ही होगा वांछित सेना का अधिनायक।

भूल कहाँ?

तेरे यश गान भजन कीर्तन
मन्त्रोच्चार धार्मिक पुस्तकों का मथन
न मिटा सका मेरे अंत में छुपा कलुष प्रलोभन
मुझे यकीन है तू सबको पहचानता
इबादत, गिनने कुछ क्षणों का स्नान
फिर वही आदतें शरीर पर गदे परिधान।
बाद रुख्सत तेरे जहाँ से पाउँ जन्नत या दोजख
दोनो तेरी बनायी है रहमत हर पलक
तेरी आभा मे सुकून, समुन्दर हो या फलक।
बस गम ये है कि मेरी हर सांस , खून की बूँद
आखरी दम तक जिस्म के साथी क्यों महरूम तेरे अमृत की बूँद
हर दाने पर लिखा है तूने नाम मेरे इंतजार को लग रही फफूंद।
मैनें हार नही मानी नाही जंग छेड़ी है
जहाँ मे मेरी आवाज फीकी करिश्मों की लकीर टेड़ी है
बेबस, गिर जाऊं तो भी तेरी नजर न टेढ़ी है।
तेरे हर फूलों का रंग, रूप, खुशबू मौसम अलग
फलो का रंग, रूप, रस, स्वाद कीमत अलग
मगर पत्तों की हरियाली वही,कैसे तुझे ढूढूं अलग।
तेरी रजा के बेशुमार नमूने कुछ मेरे अनुभव
शुक्रिया करना भी कही रस्म न बन जाये
इस नाचीज के गुनाह कम नहीं, तू मेरे साथ है बस ये तेरा बन जाये

1931 के
श्रीजगन्ना
नागपुर मे
की तथा
1960 मे
की । 19
भोपाल से
कॉलेज ए
सम्पूर्ण बु
कहते है

सदैव स
गए नाट
अभिनय
एव नाट
का दैनि
बहुत स
हैं जो
कर्मचारि
लगे रह
मे अपन
हैं यह

विचित्र जीवन पथः

जीव जन्मा धरा पर
माटी को रौंधा
कौन कैसे प्रजापति गढ़ेगा
रंग, रूप, आभा, आकर्षण
व्यक्तित्व दायित्व
पैत्रिक एव पूर्व जन्म के संस्कार
समाज परिवार परिस्थिति का भार
समय के साथ चेतना साहस आवेश
मा के स्वप्न, ममता के संवेदनशील तार
शिक्षा प्रारंभ गुरू के संरक्षण का आधार
स्नातक, युवा नये जीवन के दौर
तलाश निराशा प्रतिक्षा का दौर
उपयोगितावादी अवसरवादी
विपुल जनसंख्या, जीविका राष्ट्रवादी
सृष्टा से अपरिचित पर भाग्यवादी
दोषारोपण, शीतयुद्ध प्रतिवादी
मां से आशीष लेने में कैसी झिझक
जन्म-दात्री पर निर्भर, समर्पण बेधड़क
चलचित्र के पर्दे पर दृश्य बोलेगा
अभीप्सा से मानव बदलेगा, युग बदलेगा
वैश्व चेतना में अतिमान की फुहार
नया जीवन देवत्व की जय जय कार।

अज्ञात चितवन

सुप्रीम कोर्ट का फैसला

आदत यदि इबादत से जुड जाये
ललो के गुलाम परिवार से जुड़ जाये
आलोचना आम आदत है लोगो की
ये इंद्रियो का खेल आवारगी लोगो की
कियाशीलता सृजनात्मक दृष्टि कोण
समय का समुचित उपयोग कहलाये द्रोण
अकर्मण्य आलसी के पास समय है
आदत पालने, ज्यादा बात कम, बाकी आराम का समय है
भय, द्वेष मानव मे अस्थिरता लाती
श्वान सा भो-भो जरा मे दुम दब जाती
तर्क, कुतर्क, सदेह, शका, विकास, अवरोधक
जिज्ञासा-प्रज्ञा, महापुरुषो के वाक्य उद्घोषक
परम में आस्था, श्रद्धा, विश्वास फल दायक
विमुख रहता असतुष्ट व्यवहार में खलनायक
यह उच्चतर लोकों मे पूर्व निर्णित नवयुग का प्रादुर्भाव
सत्य से जुड़ चेतना में जी रहे बचेंगे, शेष के अस्तित्व का अभाव।

अज्ञात चितवन ।।

क्या करे ?

बहुत समय बीता

आत्मा घट सीता

सागर का पानी तो खारा

भव सागर में मानव कैसे जीता ?

शिक्षा, ज्ञान, योग, पंथ में अधूरे

गुरू, धर्म, पंथ, लक्ष्य पाने मे न पूरे

योग साधना भी न अपना पाया

बस माँ का नाम जप सत्ता में गाया

वर्षा फुहारो मे धरा भीगती हरी होती हर्षाती

अतिमानसिक चेतना की कृपा से भी काया अछूती रह [illegible]

माँ को रिझाओ, उन्मुख हो तो दौड़ी आती

चैत्यद्वार खुलते, सत्ता में रूपातर प्रक्रिया शुरू हो जाती

बहुधा लोग कहते योग कठिन अभी तो उम्र बाकी है

जगत जीवन समस्याओ से पटा साथी बस साकी है

चिमनी से कुटिया रोशन होती, रात कट जाती

सूरज की प्रचंड किरणों से अंत: तम क्यों न कट पाती'

सारे विश्व को ममता मयी करुणामयी मुस्कान खिला देती

फिर भी तमस अहं क्रोध लोभ से, सत्य को झुठला देती

योग क्या है त्याग समर्पण क्या है आज भी लोग

पूर्ण योग की बात तो सिर से ऊपर उड जाती।

भविष्य की कविता अत ज्ञान से सत्य होगा उद्घाटित

नवगान, नव, रस, नव चेतना की वृष्टि बसुंधरा होगी प्ला[illegible]

नव युग का रूपांतरण होगा, अतिमानव द्वारा संचालित
तभी परम की अभिव्यक्ति होगी, कलिका पलायन मानवता होगी
उद्वेलित।
तभी ऊषा लायेगी नव प्रभात
माँ का होगा धरा पर शक्ति साक्षात्
विरोधी शक्तियो का होगा बंद उत्पात
अतिमानव करेगा परम को आत्मसात।

परम की देन

अच्छी कहानी, काव्य सृजन का रहस्य श्री अरविंद जाने
पढ़ते हैं रस ढूंढने, आलोचना करने, समय बिताने
साहित्य सृजन मां सरस्वती का उपहार, बंदर क्या जाने।
भजन, कीर्तन, कव्वाली की भीड़, असत्य में सिर्फ जीना जाने।
शिक्षा दीक्षा से ज्ञान अर्जन, फिर धनार्जन माने
मन की शांति नीरवता, परम संतोष, चैत्य विधान की विधि माने।
समदृष्टि, सम्यक, विचार, सद्व्यवहार, काना क्या जाने
काम, क्रोध, मद, लोभ, एक पक्की कड़ी, यह पैरों की बेड़ी जाने।
दिल परम की देन, परम का वास, ऐसा ऋषि-मुनि माने
दुख-दर्द वियोग विपदा में दिल जलना, जगाने आँसू बहाने
परम यदि सदैव साथ रहे तो नहीं उलझन भ्रम पड़ने की।

★

आकाक्षा

इन्द्रिया अक्षम तेरे आभास की
मानव में कमी अभीप्सा, विश्वास की
तेरा दिव्य, अदृश्य रूप, आभा अत चक्षु जाने
पूर्ण योग के पथ पर, दूर तेरा आवास जाने
नवयुगागमन की प्रतीक्षा पूरी होगी तेरी अभिव्यक्ति
अतिमानव मे निहित होगी, सजग होगा हर व्यक्ति
पचतत्व प्रकृति मे रहेगे विद्यमान सक्रिय
मा नाम जप प्रतिध्वनित होगा, सरस प्रभाती होगी प्रिय परपराये,
आस्थाये, धर्माधताये होगी धरा से ओझिल
सयमित, समन्वित, कर्मकौशल, सरस होगा जीवन बोझिल
नव पुष्प रहेगे अर्चना की थाली मे स्वरित होगे गीत
मधुर सबध होंगे, विश्व एक परिवार, सभी तेरे गीत।

मातृभूमि

हे वात्सल्या मातृभूमि
        भारतवासी कैसे खो गया, भूले सादर नमन
तेरी गरिमा, प्रेम करुणा से चिर परिचित
        क्षमा प्रार्थना है हम कृतघ्न के सजल नयन।
मानव दुष्कृति से उजड़े वन उपवन
        विषम समय है, प्रदूषणयुक्त बह रहा पवन।
ऋतुओं मे भी परिवर्तन सा आया
        कृषक भ्रमित भूले मधुमास और सावन।
बदलता जनाधार धूमिल नैतिक मूल्य
        पाश्चात्य सभ्यता युवाओं पर भावी पतन के उठते चरन।
दौलत की धुरी पर घूम रहा लक्ष्यहीन
        बिसरायी संस्कृति, अनुशासन संयम अपनापन।
सभी क्षेत्र जीवन संचालित तेरी चेतना से
        अस्त-व्यस्त प्रजातंत्र, मानव पीड़ित मानसिक वेदना से
है परम पावनी तू सुसज्जित नदी पर्वत मालाओ से
        लोकगीत विभिन्न अंचलो के गूंजते युवा बालाओ के
हर पर्व का उल्लास, कामना सा दृष्टिगोचर
        तू ही परम से प्रार्थना कर मातृ भूमि हरषे अगोचर
वर दे। हर प्राण गर्वित हो न्योछावर देश हित मे
        पृथ्वी की आध्यात्मिक श्रेष्ठता करे लोकहित मे।

★

माचिस एक तीली

खुद जलकर
जलाती बीड़ी
कोयले की सिगड़ी
रात्रि में दीपक
लालटेन मोमबत्ती
कभी काल की उग्रतावश
जलाती फसल की ढेर
उड़ाती पेट्रोल टैंकर
परतु चिता नहीं सुलगाती।
उसी प्रकार के विचार
उगलते आग
मित्र-परिवार
खबरें फैलाकर अखबार
राष्ट्रीय शांति को चोट
बनकर घी डाला अग्नि में
गभीर चितन मनन साधना से
खुलते मन मंदिर के द्वार
आतर ज्योति जलाती
परम की ज्ञान ऊर्जा की किरण
जलाती मानव सत्ता की बुराइयाँ
भ्रम मिथ्यात्व अह, मनोविकार
तब जलती अतिमानसिक-चेतना ज्योति
हर प्रकार से ग्रहणशील, तैयार

आध्यात्म लोक में प्रकाशित पथ
पाने सदियों से अनबूझी पहेली का अर्थ
सृष्टि मिथ्या नहीं, मानव के जन्म लेने का अर्थ
अमृत्व की प्यास, मानव होना साधना समर्थ।

तम

वही माचिस! तेल बाती दिया
नित्य जलाते तुलसी धरा पर रखा
अंधेरे मे जीने की आदत
असत्य के कृत्रिम प्रकाश में सत्य छुपा रखा।
भौतिक जगत में प्रकाश के विभिन्न उपक्रम
आतर गुहा न साफ की अंधेरा ही रखा।
बैल को अरई की जरूरत, मूढ़ के कान ऐठो
नास्तिक ने टी0 व्ही0 मे भगवान् को भुला रखा।
क्या क्रम विकास धारा का करेंट इन्हे जगा पायेगा?
या शब्द ब्रह्म का ॐ अन तक गूँज पायेगा?
सत्ता के सृष्टा को रिझाने मे क्यो हिचकिचाते
पूर्ण समर्पण आतर पुकार से सब दौड़े चले आने।
भेद कहा! भूल कहाँ! मतभेद क्यो! आत्म चिंतन हो
शरीर की छन्नी से विशुद्ध प्रकाश, प्राणवायु ज्ञान को जाने दो।
चिंतनीय वस्तुस्थिति, परम का सपर्क कितना।
सभी भजते राम नाम राम से सानिध्य कितना।

आवाज सुनो!

आज मौसम बदला सा नजर आ रहा है
तनाव में नित बदलाव आता जा रहा है
मानव बुद्धि विवेक से परे उचित शब्द नहीं पा रहा है
क्या सचमुच परम धरा पर अभिव्यक्त होने जा रहा है।

यह संकेत सुखद है जो ईश्वरोन्मुखी है
यह भयावह हो सकता जो विरोधी शक्ति से सुखी है
क्रम विकास में परिवर्तन मूल प्रक्रिया है सुधारात्मक
परिवर्तन का लक्ष्य है रूपांतरण मानव सत्ता में आध्यात्मिक।

मातृ अनुकंपा, मात्र समर्पण माँ की शरण में बस एक राह है
बस मानव का मानवीयकरण कृत्रिम आधुनिकीकरण की निरंक राह है।
शकर जी की बारात में देव राक्षसगण सभी आमंत्रित
महाशक्ति का शंकर द्वारा वहन, विश्व मोहित।

उचित है हम सब काल का सम्मान करें, साथ चलें
विश्व में जनसंख्या विस्फोट घातक है सब कीट पतंगे लौ में जले
आतर चैत्य शक्ति का उद्घाटन अतिमानस में पले
जागो! सक्रमण काल चूक न जाये, नव युग की चेतना न टले।

★

बुढ़ापा

कोई रोग नही
सयोग नही
उम्र के साथ जुडा
कियाशीलना से जुता
कर्मशीलता से मुडा
जीवन की अवस्था
यात्रा की व्यवस्था
सारथी में घटती आस्था
सत्ता समन्वय का अपूर्ण योग
मृत्यु भय से ग्रसित, कर्ता से वियोग
जीवन-पर्यंन ली गयी परीक्षाओ का अंतिम परीक्षाफल
प्रायश्चित व्यर्थ, जीवन पुनरीक्षण, सुधरे कल
मातृ मंदिर की अंतिम सीढ़िया
पुनर्जन्म की पुनारावृत्ति की पीढ़िया
बनती, भटकती, प्रश्न ग्राचक रूढ़िया
वक्त हसता दीन हीनता पर, बढती दाढ़ियां
झुकती कमर नाक पर चश्मे, सहारा लाठिया।
मानव खो चुकता गर्व, यौवन, और आपा
सबके साथ जुड़ा, कैसे कब आता बुढ़ापा?

जीवन - अभिनय

चट्टान की कगार पर खड़ा, अपने कदम का निर्णय
जीवन रंगमंच पर, किसका कितना सफल अभिनय
चट्टान तक कैसे चढ़ रंगमंच पर कैसे चढ़ पाया कभी ?
प्रयास, प्रेरणा और संकल्प ने समय का साथ दिया कभी ?
रथ में जुता घोड़ा पहचानता कोड़ा और लगाम
आवारा सांड चरता बेधड़क सुबह से शाम।
श्रमिक सुनता मिल का सायरन, कसौटी कर्म की
पुजारी मंदिर के पट खोलता पूजा अर्चना कमाई धर्म की।
उम्र का नाम है उतार चढ़ाव, पुरुषार्थ दायित्व।
जीवन की भाग दौड़ नियंत्रण संयम अधिनायक।
देवी देवता पूजे, नास्तिकों ने [illegible]।
प्रश्न एक है क्या मैं भौतिक जीवन से भाग जीवन व्यर्थ करूँगा
या ईश्वर इच्छा, चेतना रस नवयुग की साधना करूँगा.

★

बजारा मन

मेरा मन बेचारा

जात का बजारा

बाजारो मे भटकना

नट सा कमाल अनिर्णित [illegible]

दौलत, इज्जत की अमिट प्यास

ठौर ठिकाने ऊचाई से जग देखने की आस

अब तो अतरिक्ष मे डर उल्का, चक्रवात

विज्ञान को चुनौती, सुरक्षित बचाने की बात

समय की अनजानी, [illegible]

हर दिन जिदगी मात लिये रहे

जिदगी धूप छाव एक [illegible]

सृष्टि के विनाश की गाथा, [illegible]

मानव अतिमानव नही बनना चाहता

रोटी कपडे का चक्कर दानव मे [illegible]

पीठ पर गृहस्थी, सडके नापना, दिन रात दौड़

अब चकाचौध नही भाती, कौन सी अज्ञात शक्ति आकर्षक ?

माँ कहती है अतिमानविक चेतना की कथा

लगती बूढी दादी की कहानी यही मन की व्यथा।

क्या सृष्टा स्वय धरा पर अभिव्यक्त होगा ?

कब क्यो, किसके लिए वो शुभ मुहूर्त होगा,

मगल परिणय के फेरे, रोशनी, शहनाई, बैड की गूज

जीवन की लबी घडियो मे इन का मिलना सुखद।

अज्ञात चिंतन

जीत की खुशियाँ ऊपरी लोकों में मनाने के स्वप्न
पूर्ण योग की चाबी अभी कोठरी, ताला कितना ?
कौन देगा बजारे को चाबी, ठिकाना मार्गदर्शन
हो सके सत्य से साक्षात्कार तो आध्यात्मिक जगत का दिग्दर्शन ?

1931
श्रीजग
नागपुर
की तथ
1960
की ।
भोपाल
कॉलेज
सम्पूर्ण
कहते

सदैव
गए न
अभिन
एवं न
का दै
बहुत
है जो
कर्मच
लगे
में अ
हैं। र

समय की गति न्यारी

आदि युगो मे अवतारो का
धरा पर जन्म लीलाये मानव उद्धार
जड चेतना पर करुणा उपकार
नर रूप हरी परपरागत
माता पिता का स्वाग सुनी भगतो की पुकार
नगे पैर वन उपवन पर्वतो पर कृपा अपार।
ईसा हजरत ने भेडे, बकरी, राम ने पशु पक्षी
कृष्ण ने गौओ, गोप, गोपियो को बाटा प्यार
सर्वेक्षण, निरीक्षण अपनी छवि का जग मे व्यापार।
तीनो नगे पाव ककड काटो मे विचरे
जग की पीडा मे आलोकित दिव्य प्यार
किसे मिली चरणो की सेवा, रज मुक्ति का द्वार।
सबका पूरा जग था परिवार
मुट्टी भर अनुयायी भी अनिभिज्ञ, निहारते दिन-चार
किसने क्या समझा, पाया, आज मनीषी करे विचार।
किसने पीरो के तलवे देखे पद-रज पायी
चरणो पर शीश नवाया,कुछ ने जन्नत पायी
कितने उसकी इच्छानुरूप बदले या पायी खुदाई ?
सभी अवतारो ने लहू बहाया, पर महत्व न बदला
सभी ने परम का पैगाम सुनाया अज्ञान न टहला
कर्मयोग का पाठ पढ़ाया, ज्यो का त्यो माटी का पुतला।

सबके साथ हुई थी शक्ति अवतरित।

क्रीड़ा लीलाओं में बहुविधि वर्णित

धर्म ग्रन्थों में विस्तार से संचित।

उन्नीसवीं सदी में श्री अरविंद और माँ पधारे

पूर्ण योग की नवीन धारायें अतिमानस शरीर में धारे

नव युग का आश्वासन सचेतन जाने कितने साधक विचारे।

★

1931
श्रीजग
नागपुर
की तर
1960
की ।
भोपाल
कॉलेज
सम्पूर्ण
कहते

सदैव
गए न
अभिन
एव न
का दे
बहुत
है जं
कर्मच
लगे
मे अ
हैं।

कोहरा

मौसम का कोहरा

अस्पष्ट धूमिल मार्ग चेहरे

तौलता मानव के मन प्राण के द्वन्द्व

प्रात रवि किरणो का अभाव, इंद्रियों मे अंधेरे।

प्रकृति, धरा का मानव जीवन मे कोहरा

समन्वय, सहिष्णुता, समय का आभार

राष्ट्र के भविष्य पर भी छाया कोहरा

प्रकाश मार्तंड कृपा, लरवाता व्यवहार।

साक्षरता अभियान, गरीबी उन्मूलन में अपव्यय

अक्षम करने बुद्धि विवेक की प्रगाढता, यह नेताओ ही हार

दैवी हस्तक्षेप ही क्रम विकास के माध्यम से

हटेगा हर स्तर का कोहरा, व्यर्थ मानव शतरज का जोर।

स्वत से प्यार करो ईश्वर तुम्हे प्यार देगा

जगत जननी क्रूर नहीं पुकारो सहर्ष हो नयी भोर।

कोहरा क्षणिक व्यवधान है छट जाता है

नियंता आलोचना या असहाय परिस्थित मे मिटते छोर।

ओस बरसेगी हरित भूमि खिल उठेगी

जड़ चेतन का पालनहारा दयालु है, एकरूपता से सभी ठोर

हटते कोहरे से छवि हौले से निखरती आती

देती प्रेरणा विश्वास, सहारा बढते चलो लक्ष्य की ओर।

ऊँ आनंन्दमयी, चैतन्यमयी, सत्यमयी परमे

हे मधुर माँ!

हम एक जटिल प्रश्न में उलझे

केवल जब तू चाहे तो सुलझे

श्री अरविंद का उक्त मंत्र

स्पष्ट प्रकट तेरा रहस्य करता मर्म तंत्र

तू आनन्दमयी, चैतन्यमयी सत्यमयी है

परम अकाट्य सत्य है मनीषियों द्वारा ग्राह्य

फिर तेरे बालक इस अपार गुण संपदा से वंचित कैसे

पक्षपात विहीन ममता करुणा दिव्य ज्ञान हो सुलभ कैसे!

सुपात्रता का माप दंड, न्यूनतम लक्षण क्या!

जप, तप, नियम, संयम, योग पूजन से अनभिज्ञ

धैर्य आस्था विश्वास समर्पण वांछित स्तर का अभाव

अत: मैं अभीप्सा की अमर ज्योति उपस्थित, अव्यक्त प्रभाव

हम रूढ़िवादी धार्मिक परंपराओं को तोड़ चुके

नाप जाप भी छोड़ दिया, क्योंकि हम अपनी माँ के

गुणगान की आदत भूल चुके

अब केवल प्रयास है तो तेरी उपस्थिति का निरंतर अभाव

श्री अरविंद दर्शन का प्रचार प्रसारदिव्य चेतना का अहसास

तेरी श्वांसों की सुरभि से कोषाणु सचारित हों

ऊँ नम: शिवाय, मंत्र का गुंजन अनवरत, सत्ता रूपांतरित हो।

इतने वर्षों की साधना ने आश्वस्त किया

सब कुछ तेरा ही है जो तूने हमें दिया

परंतु अंतिम जिज्ञासा सज्ञान ही समझ सकें

दिव्य प्रेम आनंद सचेतन ज्योतिर्मय का रस चख सकें।

चुनावी भूत

अतीत की गौरव गाथा
वर्तमान की भितरधात
कुर्सी के सपने, उठता माथा
राजनीति बन चुकी व्यवसाय,
पार्टी और सिद्धातो का सफाया
विपुल कालाधन, सीमित आय।
पार्टिया खोज रही दूसरो के सुराग
सीधे, तीखे व्यक्तिगत आक्षेप, दोषारोपण
कोई बताये नये स्वर, नारे, लय और राग।
व्यक्तिगत सामर्थ्य, कार्य क्षमता,
दलबदल के दलदल मे छुपी छवि
गिरगिट से बदलते रग कौन जुये मे जमता।
लोक तत्र की लुटी अस्मिता
स्वार्थ पर अपराधी तत्व, धनार्जन की सिगडी में सिकता
स्वच्छ स्थिर सरकार चाहिये, मतदाता मे कैसी भ्रमता।
राष्ट्रपति शासन भी है एक विकल्प
विकसित राष्ट्रो के ज्वलत उदाहरण
दीन-हीन भावना ग्रसित, कैसे भारतीय ले सकल्प?
तन- मन-धन से लुटता मतदाता परिवार
पिसता, कराहता अराजकता सिर पर सवार
सदबुद्धि दे देश को कौन, कभी चुनाव न हो अगली बार।

परिस्थितियो के गुलाम

उम्मीद पर दुनिया कायम है

पर सामने स्पष्ट आशाजनक नजारा नहीं

इस व्यस्तताओ मे सभी व्यस्त है

गाडी चल रही है लेकिन नेकन्याय सहारा नहीं।

जीवन मे समस्याये आशा निराशा जुडी

श्वास मे निबद्ध समाधान, आश्वासन, कोई हारा नहीं।

सर्वहारा वक्त का मारा, लगता बेचारा

उसने परम को गज और द्रोपदी सा पुकारा नहीं।

जब राष्ट्र पर अस्थिरता के बादल मंडराते

देशवासी अपनी ढपली बजाते, किसी का रंग गहरा नहीं।

नैतिकता राष्ट्र धर्म की बाते बेअसर

योग, साधना, सत्संग, दर्शन मे स्वयं को सवारा नहीं।

विलासिता सुख के दिवास्वप्न चलते रहे

उम्र भटकती रही, प्यार मिलता रहा व्यसनों से परिणय से कोई भी क्वारा नहीं

विकलागता भी अब सामाजिक स्तर पर

प्रशासन की सहानुभूति पर सक्षमता विचार यही

भौतिक मस्तिष्क मन प्राण को नियंत्रित करे

हीन भावना, अकर्मण्यता, प्रगति बहुमुखी हो प्रचार नहीं।

जन्म ही विशिष्ट परिस्थितियो मे जीवात्मा का निर्णय

सागर की उत्तुंग लहरो ने मछुआरे को दफ किया, डराया नहीं।

★

निराशा के क्षण

जब कोई नही अपना
क्यो देखे सुखद सपना
कैसी युक्ति!
उपयुक्ति!
उपासना!
विचारो मे वासना
प्रभु से मात्र कामना
        न दिशा बोध
        न आंतर बोध
अहिर्निश प्रयास
तथ्य हीन प्रयास
कुछ न आता रास
मानव तत्र का ह्रास
रूढिवादी, अधविश्वास
फिर भी सफल जीवन की आस
पानी से बुझाई प्यास
रोटी नही तो उपवास
        आतर पपीहा की सुनी न टेर
        सभी कहते जग मे है माया का फेर
निराशा के ये क्षण
विचन्तित करते कोषाणुओ के कण
आक्रान्त होना शांति प्रागण
प्रेरणा भी है करो आत्म पुनरीक्षण
उठो! करो या मरो का प्रण।
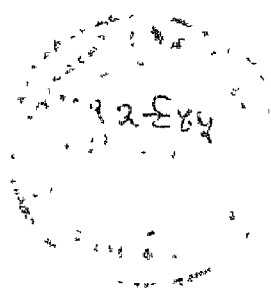
भोर कर देगी आत्म विभोर ऊषा ।
होगा तम तमस का अनावरण
सरल होगी जीवन व्याकरण गहो ए
गाये सारा विश्व मगलाचरण
नव चेतना होगा उल्लास समीकरण।

1931
श्रीज
नाग
की
196
की
भोपा
कॉले
सम्पू
कह

सदै
गए
अभि
एव
का
बहु
है
कर्म
लगे
मे
हैं।

अज्ञात चितन

नसीहत

बच्चो को बात मनवाने हेतु मचलने की आदत
बीबी बुजुर्गवारो को नापसद बात पर रूठने की आदत
आम बात है मगर इसमें आवेश का समावेश न हो
धैर्य सहनशीलता और मुस्कान से कभी हार न हो।

मानव को वक्त के साथ चलने की सलाह
समय-बद्धता ही हमेशा उज्जवल भविष्य की राह
आपकी अनुभूति अनुभव समय पर विजय पाती
वक्त आपके साथ जुडकर यह आभास किरण आती।

विपरीत परिस्थितियों को हवा न देना ही विवेक है
लोगो की आदत है स्रष्टा और किस्मत को दोषी ठहराते
गुल, गुलशन में ही तितली भौंरे मधुमक्खी होगी
बिगडे बागों मे काटे पत्ते सुगंध बहार न ठहर पाते।

यारो! खुदा तो सम है न रूठता न खुश होता
ये ख्याल न आया कि उसको मनाये कैसे
रूठना, मचलना, खफा होना अहमियत से परे
वक्त कहता आया कोशिश करते रहो, नेक राह पर जाये कैसे।

जरूरत से ज्यादा माग तवज्जों की भूखी
वरना भूख को काफी है पानी और रोटी सूखी
कमी में भी मुस्कुराकर जीना है इसान ईमान-दीन
खुशियॉ मांगो जहॉ के लिए दूसरों का पेट भरती मीन।

सच क्या है ?

ज्योति पर्व पर, दीन जलाये प्रति वर्ष
दीपो की ज्योति ने जगमगा दिया, दिखला हर्ष
एक अभिशप्त दीन-कुटिया
जहॉ मिले टाठी-लुटिया
बस एक चिमनी हर रात जले
पेट-पूजा भी वहाँ बनी समस्या हो।
अव्यक्त उस जीवन का भी अर्थ है
वह दिव्य पुरूष भी हो सकता, समेटा समाज का अनर्थ है।
उसके अत मे दिव्य ज्योति भी जलती हो भौतिक जगत की
मिथ्या, शनै शनैः सत्य में ढलती हो।
जगती का सच्चा जीव है जगाता धनांध दभ को
जीवन प्रकाशित दुनिया है, बिसराया उस प्रकाश स्तभ को।
लगे भले ही अनभिज्ञ इस मायावी भौतिक जीवन धन का
उसे आप्त शब्द देते ज्ञान पराज्ञान, आभास जीवन दर्शन का।
उसकी लाठी से नियंत्रित मा भारती का गण तत्र
उसकी गुदडी में लक्ष्मी का लाल छुपा, स्थायी स्वतत्र।
क्यो नही सीखते उन उपेक्षित आत्माओं से साधन, साधना ज्योतिर्पथ का
वसुंधरा हतप्रभ रह जाये, अप्रत्याशित अवतरण जगन्नाथ के रथ का।

बीज की अभीप्सा

बीज मे बीज छिपा
रचा जना सुहावना विश्व
प्रकृति की प्यास
प्रस्फुटित पल्लवित होने की आस
रवि किरणो से लेना प्रेरणा
रवि किरणो से ऊपर दिव्य सूर्य के दर्शन
ज्योतिर्मय होने
सुनहली धूप से ढांक रखा
सत चिदानद के लोक का
अद्वितीय आभा मंडल अवर्णनीय
अंधेरे मे चांद के पीछे खुला रहता
उस लोक का रजत द्वार प्रकाश अपार
बीज की धरा का ममत्व दुलार
वसुधरा की रस भीनी बयार
ऋतुराज बसत की महती कृपा
मनुहार विश्वातीत प्यार
बीज पर माँ का रक्षाकवच
कवच मे निहित ज्योति, ऊर्जा, आनद
जाग्रत सक्रिय उन्मेषित होने को आतुर
चीर कर नकली परतें आवरण
नव चेतना, नव युग से उद्भाषित रूपातरण
गायेगा विजय का महागान
"तमसोमा ज्योतिर्गमया
मृत्यो मा अमृत गमया"

जब विश्वास उठ जाये

डाक्टर पर मरीज का
पति-पत्नी का
अफसर और मातहत का
अधिवक्ता और न्यायाधीश का
समस्या का हल ढूंढ लिया जाता
परंतु ईश्वर विमुख ठौर नहीं पाता
जीवन-सागर में डूबता उतराता
कागज की नाव सा बह स्वाना।
जब पूर्ण विश्वास हो जाये
तो दुविधा की कोई वजह नहीं
खिचड़ी सरकारे चलती नहीं
साधनारत की गति रुकती नहीं
त्रुटियों,परेशानियों मे कमर झुकती नहीं
हृदय मंदिर मे दीप की बाती बुझती नहीं।
ज्योति जलाओ विश्वास बढ़ाओ
आदर्श-शिशु बन माँ का आशीष पाओ
मानसिक तनाव निराश दूर भगाओ
जीने में रुचि प्रगति सफलता पाओ।

★

ज्ञान ज्योति

उम्रभर त्यौहार पावन

पूजा पाठ मे दीपक जलाये

तेल बाती बुझी लौ प्रकाश मिट जाये।

जिज्ञासा न जगे, ज्योति क्यो जलती है

ज्योति की लौ आसमान ताकती

कि इस व्यक्ति की चेतना शक्ति मे कितनी है भक्ति।

ज्योति भौतिक दीपक मे जलायी जाती है

थाली मे सवार कर सजायी जाती है

आराध्य का आयहन मन-मंदिर में आवाज उठायी जाती है।

यदि परम हंस में उचित मनोभाव, मनोयोग पाता

आतर ज्योति को सदैव प्रज्ज्वलित रहने की स्वीकृति देता

उस दिव्य-ज्योति की यह छड़ी किस उम्र मे देता।

भौतिक दिये में दिया तेल बाती, माचिस चाहिये

आतर ज्योति में सतत् साधना मन प्राण शरीर का समर्पण चाहिये

चैत्य जो चेतना की माचिस से प्रकाशित हो जाये।

माँ ने हमेशा बच्चो से कहा सत्य सवारा

अभीप्सा की ज्योति से तन को उभारो

उनका आशीष सुलभ अब भी जागो पतवार सम्हारो

ज्योति समाज का दैनिक दर्द, ज्योतिधारी का पर्व

शिखा प्रतीक है संवेदन है इकाई है परम सर्व

ॐ तत्सत ज्योतिर अरविंदाय

ॐ तत्सत ज्योतिर ज्ञान अरविंदाय।

★

जीवन का कुरूक्षेत्र

आज तक पूजा अर्चना की थाली देखी
जिसमे चदन, अक्षत, फूल, अगरबत्ती, प्रसाद कपूर होता है
पूजन की मुद्रा, उचित परिधान, कलश दोष मंत्रोच्चार होता है
आराध्य से मनोकामना और फल का अभिप्राय होता है
काम असफल सो पुजारी, देवता, कोप भाजन का शिकार होता है।

अब देव मुहुर्त आ चुका, आपकी व्यक्तिगत पात्रता पर निर्भर
क्रम-विकास के बीते वर्षो में व्यक्तिगत समष्टिगत चेतना का संग्रह
मानव सत्ता, चरित्र जीवन का दृष्टिकोण, लक्ष्य मे कितना निग्रह
ईश्वरोन्मुखी साधना, समर्पित कर्म, नि स्वार्थ धर्म, अत का आग्रह।

धर्म के नाम पर कर्म की परिपाटी, रूढिवादी परपराये अर्थ रहित
न इष्ट ही साध्य हुआ न धर्मावलम्बी की आध्यात्मिक प्रगति
मानव ने हमेशा मुक्ति की अंतिम इच्छा की, उपेक्षित थी भागवत अभिव्यक्ति
अब मुख पर आया है महागान "तामसो मा ज्योतिर्गमया मृत्यो मा अमृत गमया" की सूक्ति।

परम मे निवास और भागवत चेतना की प्राप्ति हो अमरता सही भावार्थ
कौन उत्तर दे सकता-मृत्यु क्यो! अज्ञान तम क्यो! मिथ्यात्व की पूजा क्यो?
नियति और प्रारब्ध भी सत्य नही, जीवन बन गया कुरूक्षेत्र
चेतना और असत्य के बीच
बधा अतीत की जजीरो से धर्म-प्राण और सत्य के ठेकेदारों के

पंजे से छूटे कैसे!

शख ध्वनि, घटा, झांझ मजीरा का गगन भेदी नाद, परब्रह्म को न डिगा सका

अश्वपति का पूर्ण योग समर्थ हुआ असत्य का अनावरण परम शक्ति का अवरोहण करा सका

मानव-जीवन में संशोधित परिवर्तन, इस योग की रूपांतर विद्या, मानव साधक बन सका

शाश्वत का जन्म लाया नहीं शिक्षा, उपदेश, धर्म, पंथ, दिया परात्पर का निर्णायक उद्घोष

योग साध्य हो सका
उज्ज्वल भविष्य निकट आ सका
नव चेतना की किरण पा सका।

कौन आया मेरे मन के द्वारे

बहुत दिन बीते न कोई अतिथि आया
    न खुद बाहर घूमने निकले।
अतिथि का मतलब है जिसके आने-जाने की
    न तिथि न समय, न उद्देश्य निश्चित।
मेहमान, पत्र, तार या टेलीफोन से तय करते
    स्टेशन या बस स्टैंड पर हो आपकी उपस्थिति।
आदर, सत्कार और औपचारिक सौहार्द
    तय करता आगन्तुक का रुकने का विचार।
यह थे भौतिक जगत सामाजिक-व्यवहार
    एक दूसरे के बीच की दूरिया, मजबूरिया कम करने समय सार।
दर्शन मे अज्ञात का चिर-स्मरण आवाहन
    अर्चना, मंत्रोच्चारण, गुणगान, योग न चिंतन-ध्यान
वह ''एक'' रहता सबके साथ जो बुलाये या भुलाये
    निर्भर व्यक्तिगत चेतना विकास पर संस्कार साधना मे रम जाते।
वही सखा, संबधी, माता, पिता, गुरू और सच्चा साथी
    न बनाओ उसे अतिथि, मेहमान, गेस्ट वो आतर गेस्ट हाउस
    का वासी।

प्रदूषण मानव का या जग का?

पर्यावरण प्रदूषण एक विश्व समस्या है

बनाकर वैज्ञानिको ने उभार पर निर्देश कर दी।

वे भौतिक जीवन का पक्ष जटिल, अवयव

परंतु समाधान एक संकीर्ण स्वार्थी-जीवन ने दूर कर दी।

पर्यावरण-प्रदूषण मानव की प्रवृत्ति की उपज

नये उपकरणो से शोध-कार्यों से एक तरफा उत्साह उछलना।

मानव जीवन के आधुनिक परिवेश मे वैचारिक-प्रदूषण,

जीवन के मूल-भूत आधारो की अवहेलना मात्र शेष सपलना।

दिया प्रेम से जलाते सभी कोई पटाखे छोड़ते गीत मे

कई झोपडी को प्रकाश देते, समय की आंधी का पूर्वाभास नहीं।

पैदा होने वाला हर प्राण अपनी तरह जीता चला जाता

जीने की कला, विधा, धैर्य और परिणाम सोचने का अभ्यास नहीं।

प्यार भौतिक सुख समृद्धि भी एक सीमा तक भाती

निरंतर उतार चढ़ाव पटाक्षेप, सफर का कड़वा अनुभव बन जाती।

संकुचित मानचित्र के दायरे में वाह्य प्रक्रिया विस्मृत

दूसरों को अनुभव सफलता के निश्चित आयाम सीखने मे लाज आती।

मानव का बहुमुखी-विकास वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक

चरित्र चेतना आदर्शों का परम लक्ष्य वेदना बन जाती संवेदना।

साहित्यकार, कवि, कलाकार, पत्रकार और संस्कृति की धरोहर

फकीर के समान मानव की समस्याओ का निवारण प्रभु वंदना।

पुरानी प्रथायें, परंपरायें, साम्प्रदायिक आस्थायें बूढ़ी।

पुराने अचार मे जैसे लग जाती है फफूँदी।

सभी माप-दंडो का पुनरावलोकन निरीक्षण निदान पाता

रूपांतरण वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, नव मानव की दुंदुभी।

मैं मजदूर हूँ

मैं मजदूर हूँ
पचास रूपये रोज
हर प्रकार का श्रम
कोई भी हो मौसम
पसीने का इनाम
ईमान-क्षमता का काम।
वर्तमान ने,
धन की नहीं कमी
नये-नये मकानों का निर्माण
बढ़ते किराये, जनसख्या प्रमाण
सरकारी नौकरी में .
काम कम, करने आराम
बढ़ती तनख्वाह, भत्ते
कितना विकास, कागजी नाम
निरक्षरता, आरक्षण
चोरी, घोटाले, भ्रष्टा भक्षण।
मैं केवल परममय रहता हूँ।
नेता आश्वासन
समाज सेवी सस्थाओं की दया
जाति-धर्म, पंच, सरपंच सब स्वांग है
कर्म ही पूजा है पुरूषार्थ की मांग है

थककर सोने को माँ की गोद मिली
भजन, कीर्तन, अखण्ड, रामायण में नहीं रुचि।
मैं मजदूर हूँ जरूर
मगर मजबूर नही
मस्त हूँ मगरूर नहीं
किसी का हूँ या नही पर तुमसे दूर नहीं
खुदा के सिवा कोई हुजूर नहीं
अन्न जल राशन सबको देता
पर अवाम उसको क्या देता?
ये दुनिया तो भिखारी है
बस मन्नते और दौलत मागती
सल्तनतें अल्लाहो अकबर बस
इंसान से नेकी ईमान मांगती।

काल का एक विश्लेषण

हे प्रभु! पिछले जन्मों में जब मैं कीट, भृंग सा था
तुम मानव तुल्य रहे होंगे?
आज मैं अविकसित मानव हूँ भ्रम में हूँ
क्रम-विकास धारा से जुड़ना है अंतरंग इच्छा से।
अब शायद तू महामानव सा विशाल होगा?
मैं सज्ञान हुआ तो समझ में आया कि तुमने
साधारण मानव को मन बुद्धि, प्रज्ञा चेतना दी है
अब मेरा पूर्ण योग साधना का अनुष्ठान होगा।
मैं अर्जुन नहीं बनना चाहता हूँ श्री अरविंद का सिर्फ साधक
आज की विषम परिस्थितियां लू सी थपेड़े मारतीं
मुझे निर्भीक तेरे पथ पर बिना मुड़े चलना होगा।
तू कितना अनंत असीम अदृश्य विशाल है
मैं सीता के चरणों में छोटा हनुमान बन पहुँचूगा
मेरी तीव्र अभीप्सा की मशाल लिये, विश्व के तम को
हटाना होगा।
तेरी अतिमानसिक चेतना की वर्षा हो रही है
मैं भीगना चाहता हूँ, सिहरन हो, नयी सत्ता का सृजन हो
मैं तेरे सुलभ मार्ग का पथिक, यात्रा के अंत में मां की
पताका को फहराना होगा।

★

सहायता का ब्रम्हास्त्र/गाडीव धनुष

गुण मानव सत्ता का आभूषण है
दुगुर्ण, सद्‌गुण क्रमश· बांया और दाहिना हाथ
मानव-सत्ता के तीन प्रमुख अग है
मन, प्राण, शरीर, इनमें जन्म से हर गुण का साथ।
विरोधी क्रिया कलाप, सामजस्य विहीन
मूल प्रकृति, प्रवृति और संगत के प्रभाव से बदलते रग।
श्वेत प्रकाश किरण का विकिरण, बांटता सप्त रग मे
श्वेत कमल आभा माँ की, नीलाभ आभा श्री अरविद के अग मे।
दोनों का मिश्रण झलकता अम्बर और सागर में
चैत्य चेतना का अभिसार देता पूर्णयोग से रूपातरण गागर मे।
सत्ता के ऐक्य, उस परम एक में पाता प्रतिबिंब
वही कोषाणु, रक्त, श्वांस, चेतना के रसायन पाते लभ।
स्वच्छदता का दुरुपयोग, चिता, दुख हार और थकान
समन्विन प्रयास, बढते साधना की भूख, प्यास, "स्व" का भान।
साधना प्रारभ-शांति नीरवता, ध्यान, पराज्ञान
पुरूषार्थ वर्धन, माँ की शक्ति का अवलबन पूर्ण योग मे स्नान
विकेन्द्रित दायित्व सामाजिक बंधन राग-द्वेष
परम की इच्छानुरूप, कर्म, प्रगति, विरक्ति, सत्य में प्रवेश।
इस राग, रोग से अछूते, पशुवत मानव करते आलोचना
साधक के महत्वपूर्ण जीवन-क्षण, पग, धडकती रग, आत्म विवेचना।
आत्म केन्द्रित, चैत्य से नियंत्रित मां के आशीष से सिंचित
देव मुहुर्त से प्रदत्त सामर्थ्य, चेतना स्वयं हाकते हैं जीवन
रथ किंचित।
अबोध अपरिचित साधक बहता जाता क्रम विकास के प्रवाह मे

कैसी साधना, कैसा समर्पण, कैसा रूपान्तरण केवल माँ की
    चाह में।
केवल वांछित आत्मशान्ति, स्वीकृति, आस्था और संकल्प
    इस अप्रत्याशित की संक्रमण घड़ी में पूर्ण योग का मात्र विकल्प।
करो चुनाव तैयारी, अविचलित विश्वास, बनो योग पथ के वीर
    तर्क, वाद, विवाद, विषाद का समूल त्याग, लगन और धीर।
परिणाम, गंतव्य का दिव्यानंद, प्रेम, प्रकाश शक्ति
    व्यक्ति, व्यक्ति में समय सफलता कोषाणुओं का समूह
    गान पूर्ण योग की पद्धति।
तुम पहले अर्जुन थे अब सत्यवान होना है
    नवयुग के मंगलाचरण का शंख ध्वनि गान होना है।
योग मार्ग पर मुड़ना
    कब कहाँ कैसे यह दैव संयोग है।
जीवन-यात्रा का पूर्वानुमान, या सलाहकारी आयोग
    हस्तरेखा ज्योतिष, भाग्य रेखा नहीं कोई सहयोग।
पुरूष प्रकृति का गुप्त चयन आधार अंजाना
    यह अंधा मोड़ जीवांश की जन्मों से संचित निधि का
    समर्थक प्रयोग।
आपकी सतत तीव्र गहरी अभीप्सा, आत्म-निवेदन
    आत्मदान का अटल संकल्प, माँ का अनुसंचित प्रतिवेदन।

★

भावातिरेक

व्याकुलता, व्यग्रता विवाद
मानसिक विपन्नता की परिचायक
आकुलता अंतः की आशावादी प्रक्रिया,
स्पष्टता और आनंद दायक।
दैनिक जीवन की गतिविधिया
मानव-शरीर से त्रिविध धाराओ से नियन्त्रित।
समुचित मनोयोग से कर्म, सत्य मे जीने का धर्म
मन स्थिति संतुलित।
मानव स्वभावगत शका, सदेह,
निराशावादी उलझने करना आमंत्रित।
परम मे अटूट श्रद्धा, विश्वास, समर्पण ही साधना
आराध्य होता साध्य अभिमंत्रित।
नयन करते प्रतिबिंबित व्याकुलता
आकुलता हर्षातिरेक में भी नम हो जाते।
मुखाकृति का नयनो को मूक समर्थन
हृदयाचल उद्वेलित हो जाते।
यारो। भावनाओ में न बहा करो, समर्थ बनो
समभाव समस्वरता से तूफान भी टल जाते।

ध्यान

सोचना और ध्यान विपरीत क्रिया है
एकाग्रता मन की शांति नीरव प्रक्रिया है।
जन्म लिया है संयमित, सार्थक जीवन हेतु
माँ की ममता आशीष, मुक्ति का है सेतु
काया की शुद्धि हेतु, मंत्र जाप नाप ले तू
त्याग, वाचालता, अहं, हो तैयार समर्पण हेतु।
जीवात्मा को पहचानो, सब जीवों में अभिन्न है
भौतिक जीवन की विषमता, स्रष्टा भी खिन्न है
क्यों कैसे और कौन चला रहा जगन्नाथ के रथ को
किस दिव्यात्मा ने जोड़ा, अवचेतना से चेतना के पथ को
अनभिज्ञ हूँ शब्दनाद और स्वर से
अनियंत्रित हैं ये यंत्र, नहीं बोलता डर से
भागवत कृपा से वंचित, गुंजारित होने तर से
रूपांतरण तभी है संभव, भागवत चेतना वर से।

अकेले पन से भेट

आत्माओं का एकीकरण
नही प्रेम का वशीकरण
न भौतिक संधि न व्याकरण
आध्यात्मिक समीकरण!

यौवन का नशा काफूर
शुद्ध, सुगंधित कपूर
प्रजनन सा नासूर
नाचते मन के मयूर!

जीवन तपका परिणाम
अर्धांगिनी के नाम
विलम्ब का दाम
मौसम के मीठे आम!

जीवन का विराम
चित प्रतिबिम्ब शाम
आत्माओ को मिला विश्राम
लक्ष्य परात्पर का धाम!

प्रेम छुपा तकरार मे
एकत्व छुपा सार मे
आनंद है हार में
वही दिव्य प्रेम की धार मे!

रत्न

भारतरत्न से अलकृत तिरगे मे जाता नपटा
भारतीय यदि तिरगे से लिपट लें तो अलकार की क्या जरूरत है।
रत्न धरा मे खनन से पहले अनगिनत हैं
भारतीय भी इस भूमि पर अनगिनत हैं
पर भगत सिह की आन अपनी है।
जीने को जीते है सभी, दूसरो के लिए कौन जीता है?
बात सुनना भी नही चाहते केवल कहते अपनी ही
क्यों जन्मे यहां क्या लक्ष्य है प्रत्येक अहं की मदिरा पीता है।
कर्म धर्म लोक में स्वार्थ से परिपूर्ण धमनी
अकर्मण्य लक्ष्य हीन जीवन का अत है चिता
तप कर निखारो स्वर्ण सी, पुकारती है धरती
चाह मिट जायेगी इस लोक की अभिशापिता
हर प्राण होगा परिष्कृत, होगी उपलब्ध वैतरणी।
इतिहास में अकबर के नव रत्नों का विवरण
ज्योतिष विद्या में ग्रहो के नव रत्नो का आकर्षण
नारी सज्जा में नये-नये रत्नों का आभूषण
राजाओ के कोष में स्वर्ण रत्नो का संग्रहण
सब दत कथा बनकर रह जायेगी
केवल मानव चेतना आकाश गगा तक ले जायेगी
साथियों चुनो कौन सा रत्न या नक्षत्र बनोगे
अपने लिए नहीं माँ की आंखों का रत्न बनोगे!

योग-संयोग

स्वार्थ का व्यापार दुनिया
परिष्कार उसी की धरा है।
परमार्थ उदारता नही है
अहं के नाटक की बारी है।
रिश्ते-नाते अपेक्षा करते
असंतोष ही लगता हाथ
जीवन यदि एक योग है
तो संयोग का कैसा साथ।
समता समस्वरता की लय हो
भौतिक जगत में भले प्रलय हो
सच्चाई जो युगों से अभिशापित
युग के इस वृंदगान मे मिथ्या की लय हो।
आरोहण के भ्रम मे अवरोहण ही होता है
आनंद ज्ञान, ज्योति के भ्रम मे मानव सब खोता है।
जो बोया है वही उपजेगा
बबूल के वृक्ष मे आम कभी नहीं होता है।
थोड़ा जप ज्यादा हो भक्षण
अप्राप्य उसका मधुर सरक्षण।
सोना जपना स्वप्न देखना प्राणों का खेल
मन को साधिये हो न विकास क्रम ये फेल।
धर्म आदर्श नैतिकता का दर्पण
अध्यात्म मांगता पूर्ण समर्पण।
जन्म न करना हो यदि अकारथ
तर्क अविद्या जप तप का कर दो तर्पण।

गंगा महिमा से मानव

पतित पावनी गंगा
हर-हर महादेव
हर-हर गंगे
गंगातीर पर श्रद्धालु
साधु सन्यासी भिक्षुक
डुबकी लगाते
पुण्य कमाते
कुछ पर्व मनाते
आस्थाये परम्पराये
धार्मिक मान्यतायें
हिन्दू पार्थिव शरीर
और उन्हीं के फूल बहाये
नाव की सैर कराये
पर्वो पर गंगा मे दीप जलाये
दीप शिखा, आकाश-गंगा की कल्पना में
गंगा अपने शिशुवत संवारे
भौतिक जगत की गाथा दुहरायें
शिव जटा मे गंगा व पूर्ण की स्मृति
गंगा सागर भव सागर पार कराये
भारत माँ की महिमा छवि, अविरल जल प्रवाह
समेटती दीन दुखियों की आह
किसने जाना, गंगा और सागर की थाह।
कितनों को सुलझ मरभ्क की छाह।
माझी रे!------ काहे राज छुपाये!

सुखद कल्पना

ज्योति पर्व पर
हर्षोल्लास
सदभावना के ग्रीटिंग कार्ड
अवकाश
अमावश्या की काली रात
आती लक्ष्मी जी की चिर-प्रतीक्षित बारात
पावन ऋतु के जन्मे कीट पतंग
अंत में पलता कलुष आतंक
कैसी विडम्बना बीसवीं सदी की
घपले घोटाले अंतराल का हनन
कर्ज मे लदे बाट रहे धन यही प्रशासन
भारतीय मौन
दोषी कौन
कैसे क्यों आये दुर्दिन
कृत्रिम प्रकाश बढ़ा तम्
विस्मृत हम तुम
लगी धन संचय की धुन
करोड़ों भोग रहे गरीबी का घुन
अरे मनु की संतान कुछ तो गुन
फिर लक्ष्मी मुस्कायेगी
सरस्वती सद् बुद्धि लायेगी
देश की हर शाम दीवाली सी होगी

माँ भारती पुनः अह्लादित होगी
कवि रवि प्रकृति का प्रादुर्भाव
आर्य समझेंगे अपना मूल स्वभाव
गीत संगीत वाद्य खुद गुनगुनायेंगे
श्याम अवतरित हो बंशी बजायेंगे

श्वाश्वत सयोग

इस सदी का
शाश्वत सयोग
श्री अरविन्द माँ का
अनुपम पूर्ण योग
दिव्य प्रकाश और महालक्ष्मी
का पावन पर्व सा सयोग
पूर्ण एवं पश्चिम मे
अवतार, पाडुचेरी तपोभूमि
दिया विश्व को दिव्य सदेश
उज्जवल भविष्य, कर्म भूमि
क्रम विकास धारा
साधको को सवारा
समष्टि चेतना का घटनाक्रम
अतिमानसिक चेतना का उपक्रम
नयी आशाये उभरेगी प्रतिभाये
विस्तृत होगी नवयुग की आभायें
पशुवतमानक पूर्ण मानव होगा
मगला चरण अतिमानक होगा
यही है श्री अरविन्द का सदेश
भारत भूमि होगी पूर्ववत निस्सदेह
नवचेतना प्लावित मानव देह

वक्त के साथ

बाद मुद्दत, उसका पैगाम आया है
वर्षो से महज मजहबी दिखावा, अब रस्में आया है
कुरान हदीस पढी, रोजे भी रखे।
धार्मिक कट्टरता ही देखी अब थोड़ा ईमान आया है
बद से बदनाम हुए रस्मे सिजदा भी न सीखा
अपनी परेशानियों से अल्लाह पर तोहमत तीखी।
आज की मांग है सब बदों वक्त के साथ चलो।
उसे पता है बंदों की जरूरतें परेशानियां
वो उतना ही दे बिना मांगे, जितनी आपकी तकदीर में।
मुब्तला रहे खुद मे कल पर बात टली, फर्ज भूल गये
जहां मे आये ये लेकर अल्लाह की अमानत, अब कर्ज भी भूल गये।
लबे बाम कयामत की बिजलियां, फना हो जाओगे
कब्र से उठेंगे पीर-पैगम्बर बनाने जन्नत यहीं, तुम दोजख भी न पाओगे।

ग़लत रास्ता

जूझते हो क़िस्मत से, किस्मत बनाने वाले से न पूछा
हर मछुवारे के जाल में सुनहली मछली नहीं फँसती।
मुकद्दर सिकंदर हो सकता, जब मुराद सच्ची हो
अपने स्वार्थ स्वयभू न बनो, दुनिया उससे डरती।
तुझे भेजा जहां मे उसके कार्य हेतु
यहां सब भूल जाते, अवाम अपना काम करती।
आज तम ने भेद लिया सच झूठ का
कुचाल, दुर्वचन, दुष्कर्म, से जिंदगी नही चलती।
औरों के लिये जीना भी फर्ज ईमान है
कोई नहीं कहता, संत फकीर बनाने की उससे, सही इबादत नहीं होती।
अभी वक्त है, काल से सीखो काम की बात
आदमी सिकंदर या फकीर पैदा हो जब उसकी रज़ा होती ।

कहाँ गुण, कहाँ गुणवत्ता
दूरदर्शन दुर्लभ, परे दूरदर्शिता
मर्यादा विहीन, ऐसी पतिव्रता
छल छद्म, द्वेष, चले खिचड़ी सत्ता
अग प्रदर्शन से बढ़ती नारी की महत्ता
बकरिया चर गयीं सब हरा पत्ता
बेरोजगार लबार बने अधिवक्ता
मौत का नित समाचार, धन बांटती सत्ता
संचार साधन सुप्त क्या मुंबई कलकत्ता
छिड़ते युद्ध काबुल-कबोडिया, पाने को सत्ता
दादा ठेकेदार जीवन के, लगाते छक्के पे सत्ता
लोग क्यों नहीं कहते, उसकी रजा से हिलता नही कोई पत्ता
संस्कृति, सभ्यता का विलोप, नरकीय मानव-सत्ता
सत्य, प्रेम, ज्योति मे दार्शनिक परिपक्वता
कौन सुधरा है सुन प्रवचन, धुरधर वक्ता!
ऐसी विषम घड़ी में, अधीर मानव क्या कर सकता ?
इतजार है अतिमानसिक चेतना का, चैत्य की स्वायत्तता।

हर वक्त मुस्कुराना

।चिंताओ समस्याओं की उपेक्षा
अश्रुधार सूख जाये रोना रूठ जाये
स्वागत हर मस्त मौजी का
खुशियां बांटता भी सजोता भी
प्रकृति शबनम बिखेरती
आँसुओं को कब कहाँ अवसर
मनोबल शून्य पालते भ्रम
भ्रम ही भ्रमर बन झूमते उसी पर
स्वभाव से अनिर्णित परिस्थितियां
आत्म बल विश्वास, आत्म सम्मान
हो अंगरक्षक तो तम-गम घबराये
क्या मोर, पपीहा किसान के लिए
बादल बरसते हैं? वृक्ष भी हरषते हैं
जम्हाई, अंगड़ाई, छींक, डकार
रोग नहीं शरीर के इंजन की रक़म
बेवक्त की औलाद, बेवक्त के मेहमान
बगले झाकता, कभी घर कभी आसमान
माँ की तस्वीर में अनूठी मुस्कान
गंभीर मुद्रा तभी जब धरती पर आंधी तूफान।

जागो हे प्राण!

क्यों रुक गये
समस्याओ से झुक गये
व्यवधान
जीवन का विधान
मस्तिष्क मे विवेक
ज्ञान अनुसंधान
वासना युक्त प्राण
सुडौला सुन्दर
रचना महान्
चलते रहो सभी कहते
प्रेम मय, भक्ति पथ
धैर्य, काल-बोध
क्रम विकास का अथक शोध
विनाश यदि करे विरोध
अंत: का परम गुरू
देता मार्गदर्शन
आदेश, निर्देश, संदेश
ज्योतिर्मय दिशाये
तारों में प्रतिभायें
अज्ञात शक्ति का संबोधन
श्री अरविंद लाये थे
उज्ज्वल भविष्य लाये थे आश्वासन
यही है महायात्रा का गान अनन्त
जागो हे प्राण।

अज्ञात चितवन

सुख की खोज

सुख की खोज --
जो दुखी है उसे कम
जो सुखी है उसे ज्यादा
आलोचना, उत्लंघन मर्यादा
आदमी आजीवन सोचता
सुख की क्या परिभाषा?
बादल आते बढ़ जाते
कही खूब बरसते
कही मौसम भूल जाते
प्रकृति भी मानव व्यवहार से
खीजती सी है
हरियाली विलोप सीं
वृक्षो पर कुल्हाड़ी आघात
विद्युत चलित आरी मशीनें
तेज, धूप, गर्मी
फसलें पकती सूख जाती
धरती फट जाती
जैसे सधवा के पति की
उसके सामने निर्मम हत्या
आदमी भूल गया चाँदनी रातें
बद पांच सितारा होटल में
अर्ध नग्न फोम के गद्दे में
शायद मानव की नगनता

यही सुख पाती है
कलह वाद-विवाद
कटुता का आदान-प्रदान
करेला नीम आदमी को कुछ देना है
सॉप बिच्छू को जहरीला कहना
भूल जाता वही सबसे जहरीला है
जीवन की भूल भुलैया मे
सुख दुख की मार्मिक लीला में।
बसत-बहार में मातम
सावन को कौन झुलाये
राखी महगी, भाई खोटा
यहाँ कोई रहा न छोटा
औरो को पिलाते ऑसू अपने
खुद शराब ही पीते हैं
हंसी खुशी में जीते हैं ?

★

ये है लक्ष्मी की माया

सुख का प्रिय भोज दुख है,
सुख का प्रिय मित्र भी माया
सुख-दुख मे डोले काया
दुख खुश होता दीन की छाया
सुख लक्ष्मी का दिया भ्रम है
खारे समुद्र के मंथन से उपजी
विपात्र लिये हाथ, चमके कंचन सी
लक्ष्मी सदैव चचल चलायमान
भोगी की जीभ लपके, भूला अपना मान
कामधेनु और मदिरा से क्षणिक रसपान
मदाध शिथिल इंद्रिया, खोता विवेक ज्ञान
लक्ष्मी की कृष्ण पक्ष, वो भी अमावस्या भाती
सुंदरतम स्वागत, सज्जा तलाक दे जाती
शेष रहता वही सुख दुख का पिटारा
धन से पुस्तके खरीदो ज्ञान नहीं
धन से आभूषण खरीदो सौंदर्य नहीं
मखमली गद्दे पलंग पर नींद नहीं
मानव दौड़ता उसके पीछे न भाग जाये कहीं
क्षीर सागर में नाग शैया पर विष्णु के साथ
अथाह सागर की मृग मारीचिका से बचाओ अपने हाथ।
संतुलन हेतु श्री माँ ने चारो रूप धारे
महेश्वरी, महाकाली, महालक्ष्मी, सरस्वती
सुलभ दुख मे सुख, बनो माँ को प्यारे।

आत्मा का प्रयास, अनिश्चित प्रव

जीवन एक मकाम है, मुहुर्त है,
जिसे आत्मा जन्म लेने से पहले चुनती है
जमीन, जिस्म, जाति, धर्म, परिस्थिति,
निर्धारित करती क्रम, विकास की स्थिति।
जन्म लेते ही शिशु रोता है,
फिर माँ के दूध से मुंह धोता है,
रोता, मुस्कुराता, रेंगता, धरा में कुछ होता है।
सहारा का पाठ पेट से सीख खड़ा होता है।
माता-पिता परिवार सजोते है
ईंट, पत्थर, सीमेन्ट आशा मे होते हैं
शिक्षा में "राज" बुलाये जाते हैं
उज्ज्वल भविष्य के सपने सजाये जाते हैं।
यौवन की ऋतु आते ही एक से दो हो जाते हैं,
जीवन का नया आयाम, मुकाम बन जाते हैं
नयी परेशानियाँ, दायित्व सामने आते हैं,
कई मकाम रेत के घर-घूले से टूट जाते हैं।
असफल आत्माओ का एक संगठन बनता है,
सरकार से राहत का एक एजेंडा बनता है
समाज, धर्म, नैतिकता के नाम नया नारा बनता है
असभ्यता, क्रूरता, कट्टरता, दानवी बाना पहनता है।
बूढे वयस्क इसे युवा-शक्ति की बाढ़ कहते हैं,

राष्ट्र-हित की ध्वनि को झूठी मुस्कान से सहते हैं,

समाचार भी इसे छापने मे प्राथमिकता देते हैं।

इस बेढब कहानी में कई मकान अधूरे रह जाते हैं,

बिगड़ते बनते और बाढ़ मे ढह जाते हैं,

सदी की दुखद कहानी रोकर दुहराते हैं,

ज्यादा, असफल आत्माये वापस वहीं लौट कर आती हैं।

आत्मा का प्रश्न

रिश्ते नातो का क्या सिलसिला है!
इसमे किसका तन-मन-धन धुला है!
किसने क्या दिया किसको क्या मिला है?
उम्र के अनुभवो ने पूछा, क्या "वो" मिला है!

सारी उम्र किस भटकन में फस गये,
आशा, आकांक्षा स्वार्थ के पुल बंध गये,
सफलता की कुंजी न बन सकी,
जिदगी के सभी दरवाजे बद रह गये।

भ्रम सपने लगते रहे अपने,
धूप ने " परछाई" दिखायी हर समय,
महल बनते और ढहते गये,
सोचने का वक्त न था, क्यों गंवाया ये समय!

रिश्ते नाते बने सब अंत में लगे रोने,
ये असफल आत्मा जायेगी सोने,
क्या हम जन्मे थे ये अन्धी गठरी ढोने,
क्यो ज्ञान गगा में न नहाया पाप धोने।

स्त्रष्टा के विधान मे पश्चाताप निश्चित,
जन्म जन्मांतर में प्रयाश्चित अनिश्चित,
क्या कभी चेतना देगी प्रकाश नया?
मानव का जन्म अधूरा क्यों गया?

नव वर्ष

नये वर्ष पर विभिन्न विचारो की वर्षा होती है,
परतु सब मे सुख शाति समृद्धि की सरसा होती है,
लेखा जोखा तो, भौतिक जगत मे नाना होता है।
कैसे, क्यों और क्या खोया सोचने का साहस नही होता है।
आने वाले का स्वागत जितना हार्दिक है,
जाने वाले की विदाई भी क्या मार्मिक है।
योजनाओं के नये पुल बध जायेगे,
पुरानी आदतो, कमजोरियो में यों ही फंस जायेगे।
सार्थकता, समय, श्रम और राष्ट्रहित की,
ढक जाती है हर वर्ष, स्वार्थमय नियत्त की।
क्या कभी ''चेतना'' इस का अर्थ समझायेगी,
चितन मे नयी ठोस विचार धारा लायेगी?
विश्व शाति, एकत्व, समता का सपना,
हर प्राण का मंगलगान, प्राण अपना।
आज के कान फोड़ म्यूजिक दुखी शहनाई भी,
राग रागिनियो का जमाना गया, छाई आशनाई ही।
क्या लिखू, बोलूं, भेट करू फूल भी नकली हैं,
समय, शासन, राजनीति बिक गयी करेंसी नकली है।
संक्रमण काल में भविष्य भी कांप रहा,
शुतुरमुर्ग क्यो रेत में अपना मुह ढाक रहा?
सहायता, सहयोग, सहअस्तित्व को अपनाओ,
पुरूषार्थ साहस धैर्य से काल का मूल्य चुकाओ।
आर्मीनिया का भूकप तांडव का प्रथम सोपान है,
बिधाता की सृष्टि परिवर्तन का धूमिल भान है।

तत्व ज्ञान

समय, काल विचार,
प्रभु इच्छा, सीमा,
गति-विधि पर किसका नियंत्रण।
व्यक्ति, समाज, राष्ट्र,
उनकी निजी चेतना,
विश्व चेतना का आमन्त्रण।
कौन किसके लिये रुकता,
ज्वार-भाटे चन्द्रमा को तकते,
भौतिक चेतना से ऊपर उठ सकते।
मैं, के गुण द्वेष को बूझो,
वे मानव प्रगति रोक सकते,
असफल जीव सदा सिसकते।
आकांक्षा को अभीप्सा मे बदलो,
दिव्य पथ पर पग बदलो,
जीवन की परिभाषा बदली।
ब्रह्माण्ड मे प्रगति केवल मानव को,
दुर्लभ एवं आज के दानव को
मैं क्या जानूं अतिमानव को।

छानबीन

लोग जाते है
        तुम भी चले गये,
किस लिये आते हैं।
        ठीक हुआ, वो भी चले गये।
क्रमबद्ध सा, आना -जाना,
        लगता जाना पहचाना,
प्रेम जाल सा बन जाता,
        कहते बेवफा, बेगाना।
आने पर स्वरित होता गीत,
        जाने पर बजाता मातमी सगीत,
मुस्कान सिसकिया बहाती है
        प्रणय विरह के अलग गीत।
इद्रियाँ कभी नहीं थकती,
        ऊब जाता है इसान,
क्या खोया और क्या पाया,
        श्वासे देती है प्रमाण।

हसरत

तू है मेरा पर क्यों मैं तेरा नही
हसरत भी हसती गम का बसेरा यही।
चॉद तारे तो सच है मेरा सवेरा नहीं
जिंदगी तूने दी जन्नत का सवेरा कही।
मौत का डर नहीं पर हो इशारा तो कहीं
न रूक्का न पट्टा सब जुबानी बाते हैं
मोहब्बत के आलम की वारदातें हैं।
शिकवे न शिकायत, आरजू न मिन्नत
बस होगा सिजदा तेरा हो दोजख या जन्नत।
पुकारने की न हिम्मत खुश्क आँखो के आँसू
मयकदा भी हारा बेलुत्फ साकी के ऑसू।
अब तो न पीना चाहता न जीना ही
गवाह है वफा ये जर्जर मेरा सीना है।

जिन्दा लाश नहीं

मैं वो जिन्दा लाश नहीं
 जो अपनो के स्वप्न सजाऊँ
मैं वो मुर्दा नहीं जो
 गिद्धों के मन को लुभाऊँ।
मैं उस मिट्टी का पुतला हूँ
 जिसमे भारत माता का गडा नारा
आर्यो की संतान हूँ सनातन सत्य
 यहाँ न जाति धर्म भरा।
न मैं गुड हूँ वो चीटे खा जाये
 मैं भरा वो शहद हूँ राष्ट्र भ्रमर ने जिसे भरा।
मैं आशिक की जान नहीं पहचान नहीं
 न वो पतंगा मैं जो शमा पर हो मरा।
मैं तो वो अमरत्व हूँ
 उस अनंत का अंश खरा
प्रस्फुटित पल्लवित परम की छटा
 दिव्य उद्यान हो जैसे हरा भरा।

जोड़ी

मान का मत्री अभिमान
ज्ञान का संतरी है अज्ञान
कैसे सभव जीवन का विज्ञान।
खोटा जीवन ग्रथ अनेक
सम्प्रदाय धर्म गुरू अनेक
कैसे हो सत्य का भान।
आत्मा है परमात्मा से सज्ञान
करो सनातन धर्म का अभ्युत्थान
उच्चारित हो द्वापर के वृंदगान।
अवतारो ने जो किया हमने दिया भेंट
कृत्रिम वैभव सुख रहे समेट
फट न जाये आसती पेट
तुलसी, कबीर, नानक की वाणी
भ्रमित अभी भी जग के प्राणी
प्रभुता, लघुता, विशाल और वाणी
सांझ के बाद भोर भी आयेगा
काल, बादल, मन, मोर की नचायेगा
तब यह माया जाल रास न आयेगा।

शून्य

शून्य गणित का बड़ा विचित्र

सुन भाषा को शून्य का अपभ्रंश।

शून्य असीम है वही ससीम है

सनातन धर्म कहता है हम उसके ही अंश।

जप-तप से प्राप्य है वह शून्य विराट

योगी सिद्ध विलीन हो जाते परम तत्त्व की बाट।

न आदि न अंत यही, वही शून्य अनंत

वैज्ञानिक भी खोज रहे हैं इसी शून्य का अंत।

विद्या, अविद्या का अज्ञानी भी होता शून्य

निश्चल नीरवता की अनुभूति वही परम है शून्य।

काया, माया, मिट कर हो जाती है शून्य

चंदा सूरज सदा चमकते रूप है जिनका शून्य।

वही ज्योति अंधकार भी

वही बूंद मूसलाधार भी

उस पार अतिमानसिक का अधिकार भी।

अव्यक्त की अभिव्यक्ति है वह

परम पुरुष की शक्ति है वह

पराकाष्ठा भक्ति की वह

अंतिम सीढ़ी विरक्ति की वह।

राजनीति

विश्व मे क्रांति
राजनैतिक अशांति
देशो को भ्रांति
महराती किसलिये।
विश्व का अस्तित्व
राजनैतिक नेतृत्व
समाज का कृतित्व
धूमिल है किसलिये।
शांति का आवाहन
स्थायित्व का वाहन
विज्ञान का अवगाहन
वांछित है किसलिये।
मानव को मौत का डर
जीवन मे हार घर, घर
यह एक अंधा सफर है
कायरता फिर किसलिये
मौत एक विश्राम है
क्रम सुबह शाम है
शांति का पैगाम है
अधीर हो किसलिये।

फूल और पत्ती

पौधे से गिरते पत्ती और फूल

धरती पड़े अपनी औकात जाते भूल

एक दूसरे की मन स्थिनि समझते

हुक्म की अवस्था, खीज मिटाते।

पत्ती ने सरल, दीन भाव से व्यक्त किया

अपनी जीवन समाज यात्रा पौधे के साथ परहित मे तय किया।

प्रकृति से रस किरणो से फोटो सिंथेसिस

कार्बनडाइआक्साइड ली, प्राण वायु आक्सीजन को विनिमय किया।

अपने विकास मे जीवन समाज की सार्थकता निहित

रचयिता ने माली ने कलियां दी, पुष्प प्रस्फुटित।

फूल दो चार दिन साथ रहे लाये भरमाये

आधी, पानी, ओले, सूर्य की तपन से मुर्झा लिये।

स्रष्टा अच्छे मूड मे कभी पत्तियां भी रंग देता

क्रोटेन के पौधे प्रतीक, बागवान, गमलों में रखदेता।

पत्ती सदा आपदायें झेलनी आस में जीती

कई फूलो का उपहार प्रभू चरण मे भेट, सतोष मे जीती।

पत्तियों मे बेल पत्र, पान, केला का पत्ता मान व अपने उपयोग मे लेता

बकरी, पशु अपने आहार रूप में खा लेता।

फूल तो मौसम की बंदिश से बंधा, लघु जीवी

पौधा बगिया का हमसफर तृण सम श्रमजीवी।

मानव धर्म सिखाता प्रकृति से प्यार करना

पेड़ पौधों से स्नेह, सहानुभूति दया का भ्य

समाजप्रिय प्राणों और प्रकृति की एक कहानी

धरा पर समय के हस्ताक्षर. एक राम कहानी

युग कब बदलेगा ?

बहुमंजिल अट्टालिकाओ मे रहने वाले
आज भी अनभिज्ञ जीवन सफर और मंजिल से।
खुले आसमान के तले खानाबदोश
आज भी न नाप पाये धरा, दूरी साहिल से।

विज्ञान की अंतरिक्ष में छलांगे डीग
धर्म की कार रैली प्रचारको की भरी थैली।
धोबी का गधा घर का न घाट का
यज्ञ हवन मंत्र जाप माया वैसी ही फैली।

युगो से कौये की कांव-काव, उदर की खांव-खाव
कागभुसड कौन बना वे ही शहर वे ही गाव।
सदियों से नदिया सागर मे मिलती धन्य धाम
परम सत्य से एक होने, सम्हालो सत्ता की नाव।

वह एक प्रतीक्षारत सृष्टि की उत्पत्ति से आज तक
मानव मे सकल्प, श्रद्धा, संकल्प, विश्वास, अभीप्सा का अभाव।
सब ने जग देखा, सुना गुना पर न हुए सजग
औंधा घड़ा माटी का अस्पस्ट चेतना शक्ति का प्रभाव।

व्यवस्था

विवरण

मन का वातावरण मे

प्राण का भौतिक जगत मे

शरीर का जल थल अतिक्रमण मे

वितरण

भावनाओ का त्योहारो मे

सम्पदा का उचित पात्रो मे

स्पंदनो का क्रम विकास यात्रा मे

विदरण

श्रद्धा के उपकारो का

भ्रमित मानव के अपकारो का

साधक के उद्गारों का

व्याकरण

धर्मकर्म साधना की

इंद्रियों की अवधारणा की

प्रार्थना एकाग्रता ध्यान धारणा की

समीकरण

ईश्वर और ईश्वर अंश का

विश्व बंधुत्व से वश का

उपचार दुख रोगो के दश का

आचरण

शान्ति समता सौम्यता, कर्मठता

आस्था, समर्पण, सहनशीलता

चेतना का विस्तार ग्रहणशीलता

संतो के प्रवचन

व्रती होकर जीवन उसके लिये जीना

उसी का उपयुक्त यन्त्र बनकर प्रेम रस पीना।

मृग

वन में स्वच्छंद, मोहक मृग
निर्दोष सरल कोमल, शिकारी दुश्मन क्यों।
प्रकृति की प्राण मे अभिव्यक्ति
वात्सल्य का अभ्युदय, धरा पर क्षण कम क्यो।
अपरिभाषित शांति और आशा
नेह द्वीप यो न बुझ आये, तुम परिचित हो ज्यो।
क्या धरा पर पीड़ा और क्रदन का राज्य
दिव्यात्मा सुप्त या मौन, समरसता अलक्ष्य क्यो।
कवि की कल्पना की मृगनयनी
पर प्राण की पिपासा, विकृति से मानव अभ्यस्त ज्यो।
सीता ने स्वर्णमृग को मारने कहा था
अपहरण, वियोग में वर्षो तपी क्यो।
दशरथ ने शब्द भेदी बाण से श्रवण को मारा
श्रापवश पुत्र वियोग में प्राण तजे त्यो।
दर्शन मे मृग मन प्राण का प्रतीक
मां की छाया मे छलागे मारता चैत्य का प्रस्फुटन ज्यो।
प्राणो के अनुबधन, अत के स्पदन स्वीकारो
विश्व-प्रेम की अमर साधना, परात्पर की स्वीकृति ज्यो।

प्रमाण

जड़े और तने से पेड़ जानना मुश्किल

फूल, फल, पत्ती से पेड़ को जाना जाता है।

नब्ज़, नाखून, शरीर के रंग से रोग का अंदाज़

पूर्ण जांच पड़ताल, एक्सरे, सोनोग्राफी से रोग जाना जाता है।

खून की बूंद का परीक्षण बतलाया पशु मानव का

मानव रक्त का परीक्षण बीमारियों का प्रभाव जाना जाता है।

मृत शरीर के पोस्ट मार्टम से मौत का कारण

उंगलियों की रेखाओं के निशान से अभियुक्त पहचाना जाता है।

वकील की जिरह गवाहों के बयान से न्याय निर्धारित

इंसान की भाषा शैली, कर्मधर्म से ईमान पहचाना जाता है।

नेता को समाज सेवा की लगन सच्चाई विकास कार्य से

समाज का हृदय परिवर्तन, पंचायत निकायों का सदस्य

बन जाता है।

हंडी का एक चावल, खीर की एक बूंद बताती परिपक्वता

इंसान के वृक्ष में प्रभु अंश सब मर्म सिखा जाता है।

सबका प्रश्न

मनुष्य दूसरो को प्यार करता है,
खुद से प्यार क्यो नहीं करता!
दूसरे मे कमिया, त्रुटियां ढूढता,
अपने कचरे का होश नहीं!
केवल दूसरा ही गलती पर है,
अपना कोई दोष नही।
चिंतन क्या शिक्षित लोगों का ठेका नहीं!
जब पशुओ मे भी चेतना को देखा है।
सत्संग, प्रवचन, सद्वाक्य किसके लिये।
क्या कानों ने चितन शील मन से विच्छेद किये।
देखते सुनते क्यो अनदेखी, अनसुनी,
स्वार्थ, समझ, अस्वस्थ की राज है चुनी!
क्या आज का मानव अतिमानव बन जायेगा!
प्रेयश, श्रेयश के अनुकूल बन जायेगा!
श्रेष्ठ विचारो की कलम ने अभिव्यक्ति दी,
स्त्रष्टा ने कृति को स्वयं की शक्ति दी!
फिर भी जीवन पहेली बन रह गया
न समझा असफल जीवन क्या कब गया!

विषाक्त वातावरण

भारत की करोड़ों जनसंख्या

समस्याओं से जूझ रही, सरकार विकल्प ढूँढ रही।

न समझा शिक्षा का महत्त्व

न दीक्षा का दायित्व, अनपढ़ जनता अभियान ढूँढ रही।

साक्षरता अभिशाप देशव्यापी व्यर्थ

इंदिरा मिशन, कागजी आंकड़े, फर्जी सफलता पैसा हजम।

केन्द्रीय सरकार, बजट प्रावधान, सर्वसम्मत

जनादेश का आधार, महिला एवं बाल विकास कल्याण थोथे कदम।

साझा सरकार, गठबन्धन मन से न कोई जिम्मेदार

जनता को आश्वासन-स्वर्ण सिंहासन, अनिश्चित सांसे।

विदेशी पूंजीनिवेश, वर्ल्ड बैंक के ऋण

नगण्य प्रशासन, रामायण बन रही नित बन रहे काड।

सेना व सात करोड़ का पहला वेतन में

इन पर क्या विश्वास हो, देश को बेचे सीना ताने वतन के।

क्यों न माने कि हर मंत्री सुख राम है

काला धन बटोरने निःसंकोच आदमी मन मे।

पर्यावरण प्रदूषण सरकार का प्रमुख मुद्दा

राजनीति और सत्ता का प्रदूषण, निदान किस के ध्यान मे।

उलझने

बालो मे दोनो हाथ, उगंलिया
खुजलाना, बाल बिखेरना फिर संवारता
उधेडबुन में आसपास की हलचलो से बेखबर
उखड़ी-उखडी बाते, जीवन झॉकता बगलिया।
उलझन को खुद न समझाना, न दूसरो को सही प्रस्तुति
मानसिक तनाव, बिखरी एकाग्रता एवं चेतना
परिवार में नीरसता, अपनो पर अविश्वास
प्रयास शून्य, आस्था विहीन, प्रभु की स्तुति।
समय के साथ गुत्थियों का सुलझना
लक्ष्यों का हारे सिपाही सा पीछे हटना
बिन बुलाये मेहमान को पलायन-आती शांति
सभी उलझने बे बुनियाद, अव्यवस्थित, मन की भ्रांति।
समभाव उचित मनोयोग संत से सम्पर्क
एकात में चितन, मां के चरणों मे शरणागति
उलझनें दे जाती एक पात, सुगम पथ
समय की उपयोगिता, सक्रियता, जीने का विकल्प।

मत मांगो

मेरे बीते बचपन के सुहाने दिन
बिन मांगे मिला अटूट प्यार का दिन।
मेरी जवानी में दिया गया प्यार का साथ
मैं भी जग में, प्यार करता हूँ सभी के साथ।
मेरी मेहनत की कमाई, दौलत, इज्जत, यश
ईश्वर का है, मैं सभी के लिए मैं हूँ परवश।
मेरे बुढ़ापे में अनुभव जीवन की झांकी।
कर्म, भक्ति, योगसाधना, आत्म यश की साकी।
सर्वत्र समर्पित उस अभिव्यक्त परम पूज्य को
क्षोभ, नहीं लोभ नहीं, मृत्यु भय नहीं इच्छा उसी को
जीवन मय, मानव धर्म भागवत कर्म की परिभाषा
आत्मोत्कर्ष, आत्मोत्सर्ग, उसकी अभिव्यक्ति की आशा।

अज्ञात को जानो

जीवन दाता अज्ञात
    जीवन की परिभाषा अज्ञात
        जीवांश की यात्रा अज्ञात
            मात्र जन्म-मृत्यु का क्रम चल रहा
                मानव किस आशा से पल रहा।

कवि, साहित्यकार, दार्शनिक
    अनेकों मत, परिचय, प्रस्तुति
        खिलौना, कठपुतली, या कागज की नाव
            न जीने की विधा-न गतव्य बहकते पांव
                रगमच, चित्रपट पर असफल कहानी का अंत।

प्रभु इच्छा दायित्व बोध, सज्ञान
    करें प्रभु का काम प्रभु के लिए पूर्ण योगदान
        कलाकार शिल्पकार कल्पना मे करता मै उसका प्रतिपादन
            वाद्य यत्रो के तारो में साधता उसके गुण गान
                आभास हर पल, यकीन में जीय का भान।

तर्क से ऊपर उठ विश्व प्रेम से उसे खीचो
    गुलशन में लाखों पुष्प, खुशबू से सीचो
        सत्य को पहचानो मिथ्या, अहम्, स्वार्थ में गिरते नीचे
            परोपकार उदारता असहाय की सेवा से आख न मीचो
                सुखद परिणाम ही उसके प्रमाण क्यो बेचैन खीचो।

इसी भूमि पर

जहां धूप लगती है तो वहां छाया भी मिलती है
रात में चांदनी, दीपक, लालटेन व बिजली मिलती है।
चहुं ओर दुःख दुर्घटनायें क्रंदन कहीं आस भी पलती है
जन्मदर मृत्युदर की होड़, विश्व में जनसंख्या बढ़ती है
मूल मांगें रोटी कपड़ा और मकान समस्या बदलती है
भ्रष्टाचार का कद ऊंचा जिनके उनके नीचे नहीं आते
मिथ्यात्व की मेराथन दौड़ में, सच्चे सीधे मात खाते
सृष्टा ने देव दानव साथ रखे, देवताओं को मिलती असफलता
असुरों का वरदान मिला, धरती बनी नरक, कौन जलता?
क्या चुनाव समस्याओं का समाधान देंगे, नये चेहरे का आगमन
सभी नेताओं का एक ही लक्ष्य, जितना बने बटोर लो मन चाहा धन।
अब मानवता की दयनीय परिस्थिति, क्रम विकास गति बदल रहा
युग संधि के संक्रमण काल में सत असतों का मूल्यांकन चल रहा।
असन्तुलन, अस्थिरता, अनिश्चित परिधियों में विवेक शून्यता।
बुद्धिजीवी, दार्शनिक, वैज्ञानिक, असहाय, प्रेक्षक, नियति की जघन्यता।

कैसा नियंत्रण

पढ़ना लिखना सीखा, दायित्वों का भार
        डायरी मे सुख दुख के क्षण लिखता रहा।
कदाचित तीर्थ यात्रा, गगा स्नान, मंत्र जाप
        सुख दुख के भाव ईश्वर की, गुमनाम चिट्ठी लिखता रहा।
गुरूवाणी, महापुरूषो के सद्वाक्य, सत्सग यदाकदा
        स्रष्टा की खोज जीवन यात्रा मे मील के पत्थर गिनता रहा।
अव्यक्त, असीम, दीन दयाल का प्रकृति मे अनूठा प्रतिबिम्ब
        दर्पण में सुबह शाम चेहरा देखता, अंत दर्पण की धूल
        पोछता रहा।
भौतिक जगत की भूल भुलैया, धूप छैया, अंत: गुहा मे न उतरा
        अज्ञान, दंभ, भीरु, हीनभाव, अनियंत्रित प्रयास, असफल
        गडढे में उतरता रहा।
श्री मां अरविंद का दिव्य उद्घोष, अतिमानसिक चेतना का अवतरण
        निरचेतना मे चेतना की ज्योति, आशा टिकी इस घडी की,
उनका अनुसरण करता रहा।

अधूरी आस्था

नाम जाप, भजन पूजन

यज्ञ, तपो साधना, गुरू ग्रंथो की अमर वाणी

सादगी, सच्चा सीधा जीवन प्रेम वाणी

युग से प्रचलित, पर सुनी न आकाशवाणी।

कहा कमी? नियमो में नमी?

बुरे दिनों में आर्तपुकार, नव ग्रहों की शाँति पूजा

ब्राह्मण भी न रहे ब्रह्मज्ञानी, कर्म कर्तव्य दूजा

पाखंड पूजा में खर्च किया, पूर्ण समर्पण त्याग न सूझा।

कचन सी काया माखन सा मन,

सत्य, निष्ठा, परोपकार, परहित, परम को करें समर्पित

राष्ट्र धर्म सर्वोपरि, मानवता, अनेकता में एकता संकल्पित

जीवांश का परम से सायुज्य, लक्ष्य बोध, सार्थकता परिपल्वित।

सतचिदाचंद न ढूढे, न मिले, सुख दुख सहते सहते

विदा लेते जा रहे धरा से, दास्तां कहते कहते।

उन्नीसवी सदी में जितनी प्रगति

फूल गया सावन
बरस गया भादो
अब घूम जाते बादल
लड़के अस्त व्यस्त कीचड़ जाम।
मौसम मे उमस भरी तपन
रक्ताभ नेत्रों वाली दुर्गा का आवाहन
व्याघ्र पर आसीन प्रजा मे व्यग्रता
असफल प्रशासन जीवन में विषमता।
तीजा, गणेश चतुर्थी, नव दुर्गा पूजन
दशहरा राम की असुरो पर विजय, अयोध्या आगमन
यही क्रम प्रति वर्ष औपचारिकता मे ढलना
प्रकृति और क्रम विकास त्रम्न, बेढगा मानव नहीं बदलेगा।
क्या भूलना होगा इतिहास, टूटे रूढ़िवाद
धार्मिक मान्यताये कर्मकाड में व्याप्त विवाद
अब स्वाध्याय चिंतन योग से जीवन होगा सार्थक
वेद, उपनिषद, गीता रामायण भी मूढो पर निरर्थक।

उपकार

सदगुण है
मानव का धर्म है
जीवन का परम कर्म है
आराध्य का मुख्य मर्म है।
सद विचार से किया गया
उचित मनोभाव से दिया गया
समय संगत सहयोग दिया गया
स्वार्थ से परे रखा गया।
उस एहसान से सामने वाला हीन न समझे
ऋण भार युक्त दबा न समझें
उस उपकार का आकार बन न उलझे
मात्र प्रभु इच्छा का उपहार समझे।
उपकार गुणगान करके महत्ता कम होगी
जीवन मे सत्कर्मो की गिनती कम होगी
परम के सेवक न कहलाओगे
ज्ञान, ज्योति, प्रेम, शक्ति की दिव्यता न पाओगे।

यज्ञ

संपन्नता का मिथ्यात्व अह
    कृत्रिम चकाचौंध का शमन हो गया
दीपक जो मंदिरो पूजा घरो मे जलता था
    अंत. गुह्य गुफा में वही प्रज्वलित हो गया।
अज्ञान का अंहकार धुए सा वर्षो से घेरे रहा
    भौतिक चेतना का रूपांतरण, सत्ता स्वय प्रकाशित हो गया।
अस्थिर, चंचलमन की लक्ष्यहीन उडाने नियंत्रित
    सत्ता के अगों का समन्वय, चैत्य उद्घाटित हो गया।
प्रज्ञा, पराज्ञान के नये आयाम खुल गये
    उच्चतर लोको का वितरण, अतिमानसिक चेतना से साध्य हो गया।
मां श्री अरविंद के पूर्ण योग की साधना
    उन्होंने अपने शिशु को सिखायी, निष्काम कर्म योग दिनचर्या हो गया।
मेरी पूरी अपूर्णता जीवन रण में पीछे हटी
    पशुवत दैनन्दिनी में नव प्रकाश नैराश्य की छटा हो गया।
यह मात्र परम प्रभु और मां के स्पष्ट हस्तक्षेप का फल
    शायद ये जीवन यात्रा इसी जीवन मे समर्पित हो गया।

रात्रि को श्रद्धा सुमन

अंधेरी रात न होती तो

विरहणी पिया की याद न करती

चॉद भी रात्रि का पक्षधर

कृष्ण-पक्ष मे उसकी नितक्रम पर इच्छा न होती।

चॉदनी रात मे झील मे नौकायन मे प्रेमी द्वय

रातरानी, मदनमस्त, रजनीगधा की बयार न होती।

रात में झीगुर, कीडे, मकोडे आर्केस्ट्रा बजाते

चमगादड़ उल्लू साप बिच्छू की सैर न होती।

रात्रि की भीनी चादर अत चक्षु होते सक्रिय

आंतर चेतना की प्यास परम की खोज न होती।

रात्रि मे सिद्ध योगी तपस्वी का रमता मन

फरिश्ते गंधर्वों की बारात धरा पर निगरानी न करती।

रात्रि मे ओस कुहरा बसुधरा पर गुलाब जल सी

रजनी का स्वागत आलिगन प्रकृति अधूरी होती।

रात्रि मे संबोधीमन से उतरते शब्द भाव

कवियों की रचनाये और कवि संगोष्ठी न होती।

कार्तिक पूर्णिमा पर चांद रसास्वादन करता निशा के नेह का

अमावस्या की रात्रि मे लक्ष्मी पूजन की धर्म प्रथा न होती।

हे अधकार! तुमको मेरा नमन

देता तू ही सुप्रभात का आगमन

मानव नहीं करता तिरस्कार या अपमान

तेरा रूप विद्यमान महाकाली मूर्तिमान।

भारतीय नारी की महत्ता

अभी तक उपेक्षित
सही आकलन से परे
नर के उग्र रूप से डरे
सत्य पथ पर अग्रसरित करे
विशेष परिस्थितियो मे इतिहास मे उभरे
आद्या शक्ति का प्रतिरूप बन विचरे
साज, श्रृगार से मर्यादा सवरे
लालन, पालन मे ममत्व परिलक्षित
जीवन-सगिनी मे सहष्णुता प्रक्षेपित।

महाभारत मे द्रोपदी चीर हरण से
असत्य को नगन कर
पांडवो को कृष्ण के माध्यम से
सत्य की विजय पाकर
कैकेयी न होती रामायण न रची होती
नर रूप हरि राम का बनवास
स्वतः का तप, त्रास रासक्षो का नाश
वानर भालू गीधराज को अहसास
वीर हनुमान अगद का ईश्वर मे पूर्ण विश्वास
सीता का रावण वाटिका मे विरह पल
असुरो के प्रति प्रज्ज्वलित दावानल

मैथिलीशरण ने साकेत न रचा होता
राजनीति ने इंदिरा को प्रधान मत्री न बनाया होता
श्री अरविंद ने पूर्ण योग कर मां का महत्व न बताया होता
भारत वासियो को साधना के नये आयाम आश्वासन न दिया होता।

जीवन ऋतु

बरखा रानी भिगो गयी सावन
प्रेम रस में भीगा चोली दामन
काम देव और ऋतु राज का लगा मन भावन
तरुवर झूमे झूलों की पेंग मन भरता सावन।

पपीहरा, कोयलें कूकें, तरंगायित जलाशय
पावस का अद्भुत नजारा, नदियों का यही आशय
प्रकृति का सुहाग शृंगार, हरी चुनरी सामंजस्य
उच्छ्वास, उन्मिलित जगत जननी का गर्भाशय।

अनुत्तरित मानव की चिर पिपासा, सुगम सुलभ जल
उदर पोषण प्राणी की प्राथमिकता, अन्न, पत्ते, फल
अनियंत्रित दिनचर्या, ध्रष्टा की सुधि न लिए एक पल
ढलते जीवन की सांस, जीवन का लेखा जोखा विफल।

ऊषा, मध्यान्ह सन्ध्या, निशा का समयबद्ध क्रम
ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, बसंत का नहीं कोई भ्रम
पल, घंटे, दिन, रात, माह निश्चित कार्यक्रम
श्वास, नाड़ी की गिनती, धर्म संस्कार चैत्य चेतना का विकास क्रम।

शेषनाग शीर्ष पर धरा की अनवरत जीवन धारा
युगों से मानव में स्पष्ट परिवर्तन, रूपान्तरण अतिमानसिक का सहारा
हम अपने ही लिए जीते आये, कर्म, स्वार्थ परम, श्रद्धा की
इच्छा को विसारा
बने कर्मवीर, चैत्य चेतना युक्त सतचित आनद को समर्पित प्यारा।

★

उपहार

स्रष्टा का उपकार

जीवांश को मानव में दिया उतार

क्रमश विकास क्रम की धार

दिव्य चेतना का विस्तार।

जीवांश को मानव शरीर मे संभावनाये

मन प्राण शरीर मे उत्कृष्ट भावनाये

चैत्य चेतना का अतरिक्ष प्रसारण

प्रकाशित अनुभव युक्त, प्रगति का वातावरण।

पुरूष की क्रियाशील शक्ति पकृति

नैसर्गिक छटा, परम आनंद, ज्ञान की स्वीकृति

प्रादुर्भाव, भूगर्भ में संचित, खनिज धातु तेल, गैस से संतुलित

युग संधि का सक्रमण काल, अप्रत्याशित घड़ी की उपस्थिति।

आसुरी शक्ति का दैवीइच्छा का विरोध, विषमता

विश्व चिंतित, भयभीत, डराता मानव की क्षमता

विश्व में आज चेतना का मंथन, उचित पात्रो की दक्षता

मक्खन, माखन चोर बांटेगा, भविष्य यही कहता।

स्रष्टा का आयात निर्यात

आज के युग मे, जन्म और मृत्यु बहुत मंहगे हो गये
पचास वर्ष पहले, दाइया मुफ्त बच्चा पैदा कराती थी
जच्चा-बच्चा को नहलाती झुलाती, ईनाम पाती थीं
जचकी के बाद भी, गुड़ और मेवे सस्ते और अच्छे थे
आज डाक्टरनी पाच सौ गिनाती, महगी दवाइया लिखती
मा बच्चे की हिफाजत, हिदायते गोल, बस लक्ष्मी दिखती।
मृत्यु भी घरबार पर बोझ बन गयी
लकड़ी कफन, बांस हड़ियां महंगी
मृत्यु प्रमाण पत्र नगर पालिका के चक्कर
बाबू और पी0 एम0 ओ0 की दवा मंहगी।
अंतिम संस्कार के ढोंग ढकोसले, पिंडादान
त्रिवेणी में अस्थियां विसर्जन, दान, तेरही, कर्ज का भुगतान
अकाल मति बढती आबादी, बढते रोग इलाज नही आसान
जन्मदर मृत्यु औसत बढ़ी, समस्याओं का पटा आसमान।
जन्म मृत्यु की गाथा चिरकाल से, धरा के प्रादुर्भाव से ज्ञात
जीवन, जीवन व्यथा से जूझता, मानव कब पाये निजात
"कब मानव नचिकेता बनेगा" है यम को हराने की बात
समाधान केवल वही अजन्मा, असीम, सृष्टि अब तक अज्ञात।
वही आत्माओं का आवागमन
अंतराष्ट्रीय आदान-प्रदान
विपदा में विस्थापितो का वहिर्गमन
श्वास, रक्त विचारो के समान।

उन्नीसवीं सदी का सावन

वसुधरा का प्रादुर्भाव

परम पुरुष की इच्छा एवम् मौन स्वीकृति

प्रकृति की क्रियाशील शक्ति की अपूर्व छटा की अभिव्यक्ति।

प्रकृति आदिकाल से प्रतिवर्ष

बारह मास में अपने शृंगार करती

श्रावण मास की लीला, हरित परिधान, उन्मादित धरती।

बरखा की रिमझिम, झूमती अमराई

कुमारियो की बदली धड़कन, हथेली में मेंहदी रचाई

झूले की बहार, पुष्प लताओं की महिमा कवियो ने गाई।

नव वधू का गृह प्रवेश चिर प्रतीक्षित

आनद मगल गान, वधू पर आशीष की वर्षा होती

रूप गुणगान मौसम बदलते, पर ही बदलती रीति।

श्रावण मास भी समय के साथ बदला सा

रक्षाबंधन की औपचारिकता, मन प्रवण बदला सा

कभी प्रकृति बांधती थी राखी प्रभु को, अब विश्व, प्रेम शृंखला सा।

समय भविष्य का तिरस्कार प्रभु की चिंता

सुख, शाति, सौंदर्य मय जीवन पर मानव निर्मित अवरोध

सर्वनाश ताडव से पूर्व, कैसे पाये मानव बोध।

जीव और जीवन

जीव उद्धार, जीवन उद्धार एक से लगते

क्रम-विकास की धारा अपनी गति प्रगति में लगते।

जीव अमर है, शुद्ध, अभीप्सा और लक्ष्य युक्त

जीवन सत्ता का नर, पशुमन स्वार्थ युक्त।

जीव की शिक्षा-दीक्षा मां के गर्भ में आरम्भ

जीवन अज्ञानी खोजता सुख संसाधन, भरी ईर्ष्या।

जीवात्मा, जीवन रथ का सारथी, वर्णन शील

जीवन करता मिथ्यान्ध में अनुगमन, नकेल से निर्धारित मील।

जीव में आत्मसात धर्म, संस्कार संस्कृति, पराज्ञान

जीवन सार्थक हो सकता पूर्ण योग से, हो समर्पित त्यागी।

जीव में आत्मसात धर्म, संस्कार, संस्कृति, पराज्ञान

जीवन है जीव का वाहन, इंद्रिय शक्ति लौकिक ज्ञान।

आज की मांग है रूपांतर, उच्चतर लोक में आरोहण

नये दिव्य जीवन की निरंतर खोज, अतिमानसिक चेतना का अवतरण।

जीव, जीवन दोनो साध्य हैं, उचित साधना से

आदिकाल से गुरु दृष्टा का, मार्गदर्शन कर्म कांड विहीन आराधना।

अब भी समय है

मदहोश जरा अब होश में आ

ढलती धूप अब ढ रही परछाई जरा होश में आ।

न जोश दिखा, न रोष दिखा, छोड़ो नरमाई

तन मन प्राण को सवार ले, दर्प में माया भरमाई।

पग मिले है पथ चुनने को सोच समझ कर चलने को

उच्च शिखरो का आरोहण, मानसरोवर चलने को।

प्रकृति की पारलौकिक छटा, परम की अभिव्यक्ति

चैत्य चेतना सा अनुपम वाहन–योगी हो सकता हर व्यक्ति।

कभी सुना है? पर्वत, नदियाँ, सघन, वन खोलने है

उनके मातृ तुल्य आंचल में, पक्षी कलरव करते है।

एकांत भी आतुर तुम से बतियाने गुह्य ज्ञान

निहित नीरव, शांत चित, ग्रहण शील समझता विधि का विधान।

छोडो नश्वर वितान, आमंत्रित करता नीलगगन

अवतारो में भी किया साधित, जप, तप, योग सघन।

हो सकारात्मक दृष्टि कोण, दो आलस्य निराशा को तिलाजली

मॉ का आश्वासन, आशीष सुलभ, भर लो अमरत्व से अंजुली।

रुकना मना है

जीवन कश्ती चलती, सागर की जलधारा चलती

युगो से वही कहानी, थकता नही मल्लाह, वही है अल्लाह।

नदियो के दो किनारे ही देखे, दूरी वक्त के साथ बदलती

जनम के घाट से चलती, झोंके लेती, मृत्यु अंतिम साहिल, कैसा साथ।

कभी शीतल बयार, कभी तूफान, कभी उफनती लहरे

जिंदगी कहती चलती जी सके तो जी, बढ़े न ठहरे

जिंदगी है प्यार का जाम, जग में छलका के या

जो खुद को समझे, वो ही जानेगा खुदा की लगन धैर्य उत्साह से जी।

वातावरण स्तब्ध, भयावह तनहाई, सुनता किसकी सदा

दुआओं के उठने हाथ, शफा आती, यही है जो भाग्य मे बदा

नील-झील मे झकरा, जीवन सतूर फनकार जाने कितनी दूर

उसकी चुप से दिल चलता, उसकी उपस्थिति का एहसास, श्वास बदस्तूर।

उम्र गंवाते, नाव बनाते, कागज लकड़ी लोहे की, यात्रा अनबूझी

परामर्श न लिया जगतविख्यात नाविक से सात समुंदर पार जाने की न सूझी

जाम का नशा, सूरज चाँद की विश्राम रहित गति, विजय गीत

सफर अनिवार्य, प्रतिस्पर्धा बड़ी, तेरा कोई नहीं, बना परम को मीत।

यात्रा रुकने का अर्थ है जीवन का अंत

आत्म बल, आतुर पुकार दिव्य प्रेम की प्यास है सच्चा पंथ।

जीवन कड़ी

आज हमारे कौन हैं
आज आप क्यों मौन हैं?
हम दोनो मे जान भी है पहचान भी है
कल के मीठे बोलो की चाहत आज भी है।
कमजोर या पुराने हो गये ये प्रेम-बंधन
प्रदूषित, विचार, श्वासें और अंत: स्पंदन।
भौतिक जीवन के परे एक आचार संहिता है
सद्गुण, दुर्गुण एक थैली में क्यों संजोता है।
कंचन सा मन, चिंतन मनन, कर्म योग
कुछ क्षणों के साक्षी भोग सभोग वशीभूत लोग।
वक्त से कर लो यारी, श्वासो को क्या देगा
सत्य की विजय का उद्घोष प्रभु फकीर को शिक्षा देगा
दीन, दुखी असहाय, कमजोर वर्ग के प्राणी भी जीते हैं
आशा की श्वास विश्वास वैसे सदैव आँसू पीते हैं।
कौन कहता है कि तुम पक्षपाती, दिया सौतेला जीवन
प्रतीक्षा है परीक्षा है इंसान की कौन जानता है जीवन।
ये न जीवन की हार है और न स्वर्णकार गले का
समभाव, सावन, सहष्णुता सामर्थ सज्ञान दीप भले का।

चेतना का उदयान

सौन्दर्य मे आकर्षण स्वाभाविक,
विरोधाभाष उसे नष्ट करने की मनोवृति।
प्रकृति की नेह अभिव्यक्ति
पर्यटकों को नैसर्गिक आनद से तुष्टि।
उसी में पले पोषित, हँसे खेलें,
उन्हीं पेडो का शोषण, निर्मम काटना, अमानवीय विकृति।
पहाडियों का स्वार्थवश उत्खनन,
भवन निर्माण के पत्थर, ग्रेनाईट, चूना, मुरम मिटाते आकृति।
उदयान की मादकता हृदय का सौन्दर्य परखती,
मूढ अज्ञानी, फूल पौधे तोड़ते, कैसी प्रवृत्ति।
प्रकृति है स्रष्टा की धरोहर धरा पर,
आंतर हर्षातिरेक से अभिवादन, भक्तिमय अभिव्यक्ति।
हो विश्व चेतना का प्रचार, प्रकृति को सवारों प्रेम से,
सदचित आनद में आरोहण की सुलभ सरल सूक्ति।

मित्रता

दोस्ती वक्त के साथ मे [illegible] जाये

तो कभी [illegible], [illegible] रुतबों मे नजरें बदल जाये।

दोषारोपण, छिद्रान्वेषण, तर्क तराजू के नाजुक बाट

खीर में खट्टा स्वाद, भरोसे को चोट, दुश्मनी मे ढल जाये।

यारो! दोस्ती को तराजू मे तोलना ठीक नहीं

ये तो दिल की परख और चाहत है, बस अमर हो जाये।

मैत्री एक आश्वासन है, एहसास है सुगंध है

बेखौफ आलिंगन हो, शुभ चिंतक हजारों हो सकते

विश्वास की शहद मे मधुमक्खियां पलती काश झटके में न मिट जाये।

क्षण भंगुर जीवन

ओ पतंगे,

तू जन्मा सिर्फ क्षण भंगुर जीवन को जीने
ले जग का जायका शम्मा पर कुर्बानी देने
अजन्मे की ज्योति तुझ में, ज्योतिर्मय में लीन होने
जप, तप, त्याग का तू योगी, सार्थक जीवन संजोने।

ओ पतंगे,

फिर ये रुसवाई कैसी शम्मा कभी बेवफा नहीं होती,
या वरदान अमरता का ले, दे संदेश शम्मा है कैसी
तू मानव सा भ्रमित, कुंठित, लक्ष्य हीन भी नहीं
देश काल और स्वार्थ पालन से डिगता नहीं।

ओ पतंगे,

लौट जा उड़ जा, आकाश से ऊपर के देश में
रात्रि के तम में तू उजाला देखता किस परिवेश में?
मेरा भी संदेश ले जाना, परहित उसकी कृपा का आकांक्षी
पूर्ण योग का अनुगामी, सत्य निष्ठा सुमन है साक्षी।

सूनापन

सूनापन और सुनसान व्यक्ति और वक्त के साथ

चाहे अनजाने यदाकदा आते जाते हैं।

सूनापन मानसिकता से बंधा, निराशा में पला, आत्मबल रहित।

कर्तव्य में बंधा, या वनों में स्वयं को पाते।

सूनापन निराशावादी दृष्टिकोण और व्यथा का सूचक है

जीवन के सतत श्रम के बाद आनंद सुनसान जगहों में पाते हैं।

कैसी विडंबना है कि जग में प्राणियों की अपार भीड़

वनों की निर्मम कटाई, कैसे सूनापन और सुनसान में फल जाते हैं।

सूनापन का रोचक इलाज है मधुर संगीत, गीत, प्रकृति में सौन्दर्य

सुनसान बाग में उच्छृंखल भौंरों का भ्रमण चिन्तन कर पाते हैं।

मैं क्या हूँ

न मैं भारतीय, न हिन्दू और न आर्यपुत्र
    मेरी अभिलाषा है विश्व प्रेम, जाति धर्म औरो से परे।
सदियो से भारत की संस्कृति, सभ्यता, और उदारता
    के साये मे घृणित राजनीति, दान की प्रकृति मानवता से परे।
आज अर्थहीन, प्रभाव हीन, और लक्ष्य हीन यहा जन्मे अवतार
    राम का आदर्श, मर्यादा और ऊँच नीच से परे,14 वर्ष वनो मे फिरे।
निष्फल राक्षस कुल मे जन्मे विभीषण, वानराधीश हनुमान
    लाछन लगाने वाला धोबी, कैकयी मथरा का षडयन्त्र शिराधार्य किये।
रामराज्य गाधी की आदर्श आकाक्षा थी, विवेकानद का विश्व धर्म
    श्री अरविंद का विश्व कल्याण हेतु पूर्ण योगदान चेतना अवतरण का
आश्वासन लिये।
भारत भूमि ने हमे क्या नही दिया, विश्व स्तर के वैज्ञानिक
    दार्शनिक, ऋषि मुनी, कलाकार, साहित्यकारो ने भाल गौरवान्वित किये।
राष्ट्र के कर्णधार, उदार, धर्म निर्पेक्ष और मानवता वादी रहे
    पिछड़ी जातियो का उत्थान, नारी का समाज में स्थान संविधान में किये।
मै भक्तप्रह्लाद, भरत, भगतसिंह बनने की कल्पना आज नही कर सकता
    परन्तु नैसर्गिक बगिया का महकता फूल जो परम पुरुष और प्रकृति
के सानिध्य मे जिये।

त्योहार का इंतजार

कल विजया दशमी आयी थी
प्रतिवर्ष रावण परिवार का दहन
औपचारिक गले मिलन
न सभी वृक्ष की याद पत्ती भेंट,
नील कंठ दर्शन, जिंदा मछली भेंट,
अत: के रावण न मरे, न किया प्रयास
कब बनेंगे सुजान, क्या राम को देंगे पुन. वनवास।
आज की सुनहली धूप खिड़की लांघ
बिछौने पर आर्य ने करवट बदली गाजा-भांग
चादर की सिलवटे नींद से युद्ध का दर्शाती हाल
गर्मजोशी से इंतजार था कैलेन्डर लिये टंगी दीवाल
राम लीला नौ दुर्गा की झांकियां, पितृ पक्ष की बिदा
सोचने को बाध्य-कौन अपना जिससे मिले बढ़ती भीड़ सदा
नौ दिन देवी पर महिलायें वारती, फिर कर देती अलविदा।
बीस दिन बाद दीपावली की तैयारी
घरों की सफाई, पुताई, प्रकाश व्यवस्था, बच्चो के पटाखो की बारी
महाजनो की रोकड़ बही, कर्जदारों को मिलना तकाजा
लक्ष्मी पूजन, आज के धन लोलुप को प्रमुख पूजा
दीपावली बधाईयों का तांता, जुआड़ियों को न बूझा
जीने की वांछित विधा से दूर, स्वनिर्मित सदस्यों से जूझा।

किसके लिये

जन्मते ही रोये
  जायतीना में खोये
    खाली हाथ जा रहे
      जग हंसे, अपने रोये
        तुम्हें हंसना मुस्कुराना भी न आया।

सामाजिक सन्स्कार हुए
  बाग-बगीचे लगाये अनाथ हुए
    आड़े वक्त दरवाजे खटखटाये
      दफीने खोजे, खोदे खेत और कुये
        देर हो गयी कब्र खुदने का वक्त आया।

मानव भर भाग्य संभावनाओं में पूर्ण
  बुद्धि विवेक, प्रज्ञा की तिजोरी न खोली
    तरंगें, भावनायें धर्म और भक्ति आती चली जाती
      दूसरों को ताकना, उनके गिरेबां में झांकना
        खेद है, जीवन की सार्थकता को रखा अपूर्ण।

माँ कहती प्रत्येक जीव से हरदम कदमकदम
  परम के लिए जियो पूर्ण मनोयोग से कर्म करो
    नैतिकता, स्वधर्म, राष्ट्रधर्म से गूढ़ रहस्य अर्जित करो
      माँ संतान का अमिट प्रेम आदेश पात्रता का प्रयास करो
        चैतन्य पुन्य है सारथी, जगन्नाथ के रथारूढ़ का प्रवास करो।
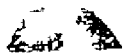
समस्याये

जीवन की मूलभूत समस्याये
    जीवन ने नहीं दी।
मानव की अपनी स्वच्छंद मन बुद्धि की
    भाग की अनुचित मांगो ने दी।
भाग्यवादी मनुष्यो को निष्ठुर कह जाना
    अंश को परमात्मा की डोर न मिली।
शोक से भाग बगीचे लगाये, बस
    भावना से जल खाद न दी तो कली न खिली।
आलोचना, दोषारोपण, संतोष हीन वाणी,
    आंतर संकेत, दैववाणी न सुनी, दुविधा गयी नहीं।
लक्ष्य-हीन, विवेक हीन अंध विश्वास मे
    जीवन यात्रा कंटकाकीर्ण जीवन के पग थके दोराज अभी मिली।
जीवन मे गति प्रगति के सुअवसर आते है
    स्वभाववत, दुर्गति की ढोलक पीटते, रोते जाते हैं।
सुर असुर का द्वन्द्व, सदैव चलता जीवन के रण क्षेत्र मे
    सत्य की ही विजय होती है, मिथ्या अहं नष्ट हो जाते हैं,
समस्याओं से समझौता कर, शांति सतोष अनासक्ति
    हर समस्या का समाधान, देती अज्ञात शक्ति।

काल की महिमा

काल की अमर ज्योति धूमिल नहीं होती

ये भौतिक निगाहों के भ्रम का खेल है।

हम सब मिथ्यान्ध में सोने के आदी

माया की छाया का झूठा खेल है।

आपदा में व्याकुल, सहानुभूति ढूँढते

भाग्यवादी न बनें, जीवन चेतना का खेल है।

दुःख, रोग, विषाद को हमारी अवचेतना बुलाती

जप-तप, मं. दवा नहीं नव चेतना की बेल है।

तुम उस परम के पुत्र हो स्वच्छंद भी

जीवन रागिनी में नव रसों का मेल है।

अनभिज्ञ, अपरिपक्व और अपरिचित से जीवन भर रहे

समता भाव से किया गया सुकर्म भक्ति है, परात्पर से मेल है।

अंत का दर्पण

दर्पण. आम आदमी

सुबह शाम देखना

साक्षात्कार किसका!

वो तो सदा सच बोलता

मुस्कराना रोना भी

वो कहता अंत: के दर्पण को भी

गंगाजल पवित्र स्वच्छंद

सचेतन दिग्दर्शक

प्रकाशित रखो।

आत्म दर्शन होगा

आत्म बोध में रजा से बादल हटेंगे

संकुचित काया को अबाध प्रेरणा

परम परिचित सभी से

सत चित आनंद ब्रह्म

सीखते चलना ही अभिप्राय।

अधूरी साधना

चुप बैठना आँखे बंद कर,
　　ज्ञान मुद्रा बनाना जरूरी नहीं।
चंचल मन को विचार शून्य करना,
　　निश्चल होकर भी ध्यान हो जरूरी नहीं।
अगरबत्ती फूल, दीपक, पद्मासन से
　　वांछित एकाग्रता हो जाती नहीं।
यदि योग चिन्तन उद्देश्य हो,
　　एकाग्रता ध्यान चेतना संवर्धन हो जरूरी नहीं।
व्यक्तिगत प्रयास से ज्ञान का कुछ
　　उच्चतर सोपानों में उदारोहण हो संभव नहीं।
बौद्धिक ज्ञान योग संबंधी पुस्तकों का अध्ययन,
　　गुरु के वरदहस्त बिना पूर्ण हो ये जरूरी नहीं।
चैतन्य पुरुष ही श्रेष्ठ गुरु है, परम ज्ञान है,
　　दिव्य ज्योति बिना सच्चा सारथी नहीं।
सप्तअश्वी रथ रवि का, आरूढ उस पर,
　　परम की स्वीकृति बिना पूर्णता साध्य ही नहीं।

अभिप्राय-2

चल रहा होड़
मंजिल ओझल
जीवन बोझिल
थकन की गति ज्यादा
मुख में दम स्वर कम
कोई हौसला दे दे
या नये आध्यात्मिक चमत्कार से
भरत का त्राण दे दे
हनुमत लाल पवन सुत बन
परम के चरणों मे पदरज पाऊं
कौन कहता है कि
कलियुग, त्रेता द्वापर, सतयुग
मे अवतरित होता मानवस्वरूप
विश्वोद्धार, मानव प्रकृति
का अस्वीकृत अमान्य परिवर्तन
वही पुराना गंदा बर्तन
बेमानी हो चुके भजन-कीर्तन
दीपक की ज्योति में दिव्य प्रकाश दिखलाये
जीवात्मा, अंतरात्मा, चैन्य का बारीक अर्थ समझाये
क्या मैं योगी हो सकता हूँ
भोग आसक्तियां, आकांक्षाये मुक्त
जागे व्यष्टि चेतना, बाह्य इंद्रिया सुप्त
यह यात्रा कब और क्यों हो रही?
इस सबका शायद एक हेतु
वही हो अभिव्यक्त, बनाये मानव हेतु सेतु

क्या चाहिये ?

मनुष्य को आधार चाहिये

[illegible] का सहयोग, भाग्य का योग।

[illegible] भौतिक ऐश्वर्य एवं भोग।

[illegible], अंतरिक्ष में प्रयोग।

प्राप्य है समता शांति का सुयोग।

मनुष्य को आधार चाहिये,

नकली तराजू से घपला, आवंटन, संतुलन।

[illegible] मुद्रा-स्फीति, धरना आंदोलन।

लक्ष्य है स्वर्ण, नहीं पदक भारोत्तोलन।

कर की चोरी, अवहेलना, राजनैतिक मथन।

मनुष्य को आधार चाहिये,

अपने क्षेत्र को, दृष्टिकोण को विस्तृत करने?

या विकास योजनाओं से गरीबों को वंचित करने?

या धर्म के ठेकेदार होकर, कालाधन संचित करने?

या शासन की गुप्त योजना प्रकाशित करने?

दूरदर्शन, रेडियो पर समाचार चाहिये,

कहां अकाल, बाढ़, भूकंप, क्रांति का संकेत।

लगायें नागफनी,काटे सरसों के खेत।

बांधों के ठेके स्वीकृत, करे एकत्रित रेत।

मन,तन,धन सब काला, ड्रेस खादी श्वेत।

मुझे तो अखबार चाहिये

जो सट्टे का नम्बर प्रतिदिन छपवाये।

हत्या , अपहरण , गबन के शीर्षक नये लगाये।

प्रशासन [illegible] दोषी , सत्य की [illegible] छिपाये।

अंत में मेरी फोटो, तुकबंदी को भी जनता तक ले जाये।

हर सपना साकार चाहिये,

मस्ती यौवन बरकरार चाहिये,

नौकरी, बंगला, कार चाहिये,

कोरी जय-जयकार चाहिये,

कलियुग का विस्तार चाहिये,

रावण का अवतार चाहिये।

श्वास की आस

अजनबी रास्ता ,
डग विश्वास्ता,
भय, थकान वास्ता।
अर्धांगिनि से उंगली,
श्वासमें आस्था,
पग भूले व्यथा।
अनूठे प्यार की कथा,
सामने कोई न था।
प्राण त्रस्त था।
घिसी पिटी राह,
ऊब और कराह,
आशा लाती चाह।
पग नहीं मन पग चलता
प्राण.भी मचलता,
शरीर ही सब ढोता।
अपनों की अटकलें,
प्रोत्साहित शक्ले,
क्या छोड़े क्या रख ले।
यात्रा अनवरत,
रुकने की नहीं हाजत,
जीवन की शिकायत ।
मनीषी का प्रज्ञा द्वंद्व,
कर्मयोगी का आनंद,
प्रेम के नही द्वार बंद।
चलना सीखो, बढ़ना सीखो

चुनौती

किसने बूझी,
      विधि की विधायें,
संविधान की ,
      स्पष्ट धारायें।
भौतिक मन से ,
      ऊगने यौवन से,
वसुंधरा गगन में .
      भ्रमित चितवन से।
पांच अंधे मिले अचानक,
      हाथी के विवरण की कथा तक,
मानव शून्यता भयानक ,
      युवा शक्ति आज है स्नातक।
रक्त की बूंदें बने अंगारे।
      कौन बूझे , कौन इन्हें सवारे ?
माँ के दामन के सितारे,
      सीमा पर कौन ललकारे ?
भट्ठी श्वास कारखानों की,
      चाहत है क्या वीरगति पाने की।।

दवा या दुआ

सबकी दुआएं मैं मांगता हूं
  नेक सलाह भी मानता हूं
बीमारी सबको घेरे हैं,
  कहीं रोशनी, व अंधेरे हैं।
जिंदगी मे घबराहट है,
  उसूलो मे टकराहट है।
विश्व राजनीति मे करवट है,
  मौन मे भी कडुवाहट है।
कल के खतरे की आहट है।
  हर श्वास मे थकावट है।
कौन सी मीनारें दरगाह हैं।
  फरिश्ते पर सब की निगाहे है।
दुआ हर मर्ज दवा होती है,
  बदकिस्मतो को देरी होती है।
दुआ के लिये जब हाथ उठ जाये,
  इन्सान भी फरिश्ता बन जायें।
मैं, मैं करते बकरा हलाल होता है,
  दोजख के दर पे खडा रोता है
बुंदेली माटी की महक रम जाये,
  इतिहास एक यकीन बन जाये।।

रिश्ते

रिश्तो के बहुत नाम होते हैं,
फरिश्तो का कोई नहीं।
रिश्ते में औरत का है खेल,
जिन्दगी भर कई ड्रेस बदली,
जिन्दगी के फटे कपड़े, बीबी ही सिलती है।
बीबी की निगाहें बे मिसाल,
रिश्तो की दीवार को नींव मिलती है।
एक कबीला होता है खड़ा
हर जान को रोटी, और नींद मिलती है।
हिमालय और आसमान दोनो ऊँचे,
पर आसमां के नीचे रहमत मिलती है।
इस जग में खुशियाँ ढूढते हैं,
पर सिसकते नन्हें-मुन्ने को माँ की गोद मे,
राहत मिलती है।

असहाय

आज सत्य पर ही नहीं विश्वास,
कैसे सम्भव औरों पर विश्वास,
भय, भ्रांति कपट की सांसें,
पराई विभूति जब आसे,
निर्दोष को अपराध में फांसें,
आतंक में बढ़ती लाशें।
सत्ता कैसे जीते जनता का विश्वास,
ले रहा अस्थिरता की श्वासें,
आज न्याय की आँखें हैं खुली,
मानवता मुद्रा में तुली,
जीवन है नगरवधू वैशाली,
कलंकित भौतिकता जीवन प्रणाली।
धर्म, कर्म, ईमान, त्याग का यह ह्रास,
विश्व क्रांति का नग्न तांडव, उच्छ्वास,
जागो यह युग परिवर्तन बेला,
असंख्य प्राणी हैं पर तू अकेला,
अब तक जिस माँ के आँचल में खेला,
दायित्वों को कर काल में ढकेला।
अंधा धृतराष्ट्र प्रतिज्ञ विवश पितामह,
कृष्णावतार के युग में गये ढह,
विदुर, द्रोण और मुनि व्यास,
विवश विदुर साक्षी महाभारत का इतिहास
कर्म न्याय न शासन पर विश्वास,
सब बन गये कलयुग के इतिहास।।

दोषी कौन

आज नौकरी बिकती है,
        भ्रष्टाचार की तदूरी सिकती है,
प्रश्न प्रमुख नौकरी ही क्यों,
        प्रशासनयंत्र, बाबू राज पर टिकता है।
विश्व चेतना का संधिकाल,
        हर क्षेत्र में भ्रांति पनपती है।
मंहगाई, रिश्वतवाद २ " आतंक ।
        भोली जनता ही सिसकती है।
आज चुनाव का मुद्दा क्या?
        आरक्षण बेरोजगारी, क्या है।
किसके पास है समाधान?
        स्वार्थ , लालच पर इंसानियत बिकती है।
क्या यही सृष्टि का संविधान?
        गणतंत्र की नींव खिसकती है।

कैद आत्मा

मानव में कमजोरी है,
दानव में सीना जोरी है,
स्रष्टा की यह कर चोरी है,
आत्मा कैद अब मोरी है।
भोग विलास का लालायित प्रान,
लक्ष्मीपति होने का गढ़ता प्लान,
असहाय, आलोचना और अपमान,
धर्म, संस्कृति का न तनिक भी मान।
चालिस वर्ष के गणतंत्र में,
चला आई भतीजावाद,
राजनीतिक परिवार की विरासत,
गुण्डों, चमचों का समर्थन, दाद।
क्रांति लायेगी, राष्ट्रचेतना,
सक्रिय है विश्व -चेतना,
मानव होगा पुरुषार्थ महान,
गायेगें सब मिल महिमा गान।

चाह

मैं कुर्सी नही, तख्त चाहता हूँ,
सोने, चाँदी का नही चिल्ला की लकड़ी,
मतदाता से विश्वासघात बन मकड़ी।
मैं रावण हूँ राम चाहता हूँ,
जुर्म अपहरण असली सीता नही पकड़ी,
मंदोदरी, विभीषण की अन्तः आवाज न पकड़ी
जनमानस बुंदेल भूमिका उदय चाहता हूँ
आल्हा ऊदल, छत्रसाल, ओरछा की तलवार कड़की,
फिरंगियों के विरोध मे यहीं से ज्वाला भड़की।
नौगाँव की ऐतिहासिक स्थली,
दशाब्दियो से उपेक्षित दरिद्र खड़ी,
राजनीति में अभिशापित नहीं जुड़ी इसकी कड़ी।
मैं उस दग्ध भट्टी की राख सुलगाना चाहता हूँ,
सौगंध बुन्देल भूमि की जो अपयश में जकड़ी,
खाली इसकी झोली मधुर इसकी बोली
परित्यक्ता लड़की है।
तख्ते ताऊस नहीं लक्ष्य, बुन्देली चारपाई चाह नही
धन, यश, मान नहीं केवल रक्त की तरूणाई,
मैं ऊचाई मूंछ नहीं नापूंगा छाती की चौड़ाई।

चुनाव समीक्षा

चुनावी अटकलें.
महत्वाकांक्षी प्रत्याशी,
मटका सट्टा या जुआ,
राजनीति अंधा कुँआ।

पार्टियाँ, चुनाव चिन्ह,
कार, जीप, ट्रैक्टर लाना,
अनुष्टान सत, फकीरों की दुआ,
गुट बंदी, धमकी से प्रसार हुआ।

मुद्रा का दुरूपयोग,
वोट कितना परमानेंट,
जातिवाद भी शुरू हुआ,
असामाजिक तत्व हावी हुआ।

बूथ कैप्चर, मतदाता पर दबाव,
हेरा फेरी, चुनाव अधिकारी पर दबाव,
चुनाव विधेयक व्यर्थ है,
राजीव का चुनाव वैध हुआ।

राष्ट्रीय चरित्र, साक्षरता का अनुपात,
प्रजातंत्र के नाम पर मुद्रा का उत्पात,
उपयुक्त पात्र का चयन हुआ,
चुनाव परिणाम विपरीत हुआ।

तिमिर

रात आती है,
लोरियां गाती है,
फिर भी नींद नही आती है।
अमावस डराती,
चांदनी बहलाती,
एवं जिन्दगी ढलजाती।
अन्धेरा, सन्नाटा,
कैबरे, बार में, सन्नाटा,
भूखा ढूढ़ता आटा।
कारों के हार्न, रूकवार,
फाइव स्टार,
एजेन्सी का कारोबार।
नित्त पौ फटती है,
आशा बढ़ती है,
आज कैसी कटती है।
धूप छाव, दिन रात,
हर घर में अमूमन बात,
चोर बहुत सतर्कता, बचाव।
अधेरा बार-बार कहता है,
हसीन सुबह आयेगी,
नया पृष्ठ खोल जायेगी।
तम को हटाना, घटाना,
पुरूषार्थ, सकल्प को जगाना,
विश्वास धैर्य का खुला खजाना।

निशा, ऊषा की अग्रदूत,
प्रभाती करती वशीभूत,
तम देता मूल, भय दूत।

चैत्य शक्ति

उम्र, थकान,
भावी मुस्कान,
सुखद गान,
भौतिक सुख प्रान।
जिज्ञासा, ज्ञान,
बहुधा अनुमान,
अबोध अंजान,
सहानुभति, प्रेम पान।
जिंदगी भर जूझते,
जग से बूझते,
विकल्प नहीं सूझते,
अंत: से न पूछते।
विचार प्रेम, भावना,
अवचेतन से जागना,
दिव्यता की संभावना,
दिव्य संदेश मानना।
जीवन व्यर्थ लक्ष्यहीन,
अज्ञानी सदा दीन,
गोपियां तल्लीन,
कृष्ण की मधुर बीन।
रस के खान,
प्रेम भक्ति ज्ञान,
पीवे सो सज्ञान,
चैत्य शक्ति का करले पान।

डॉ० साहब मूलत कविता, सामयिक विषयो पर लेख तथ सस्मरण लिखते है जो समय --समय पर प्रकाशित एव प्रसारित होते है। महक माटी की, सिलसिला, अदवे फकीर एव आतकवाद एक अभिशाप, निशाका नेह; बिखरे फूल एव झरोखा प्रकाशित हो चुके हैं।

प्रस्तुत काव्य सग्रह – अज्ञात चितवन मे अपने अनुभवो को कविता के माध्यम से उजागर करने का सफल प्रयास किया है। आध्यात्मिक एव दार्शनिक विचारो से परिपूर्ण अज्ञात चितवन की कविताए मानव को सही मार्ग दिखाने मे सक्षम है।

डॉ० चौहान की पुस्तके काव्य–सग्रह, यकीन एव त्रिवेणी प्रकाशनाधीन है। डॉ० सिह अनेक साहित्यिक सस्थाओ के सरक्षक पदाधिकारी एव सदस्य है। कई समाचार पत्रो एव समिति के अध्यक्ष हैं। अरविन्द सोसायटी के अध्यक्ष कवि चौहान की आस्था अरविन्द दर्शन मे है तथा वह अरविन्द दर्शन से लोगो को परिचित कराते है। श्री मॉ के भक्त है। राष्ट्रीय एकता मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, समाज सुधार के कामो मे गहरी रुचि लेते हैं तथा एकान्त मे गजले सुनते हैं।